किसान चेतना

राष्ट्रीय महाधिवेशन-हस्तिनापुर

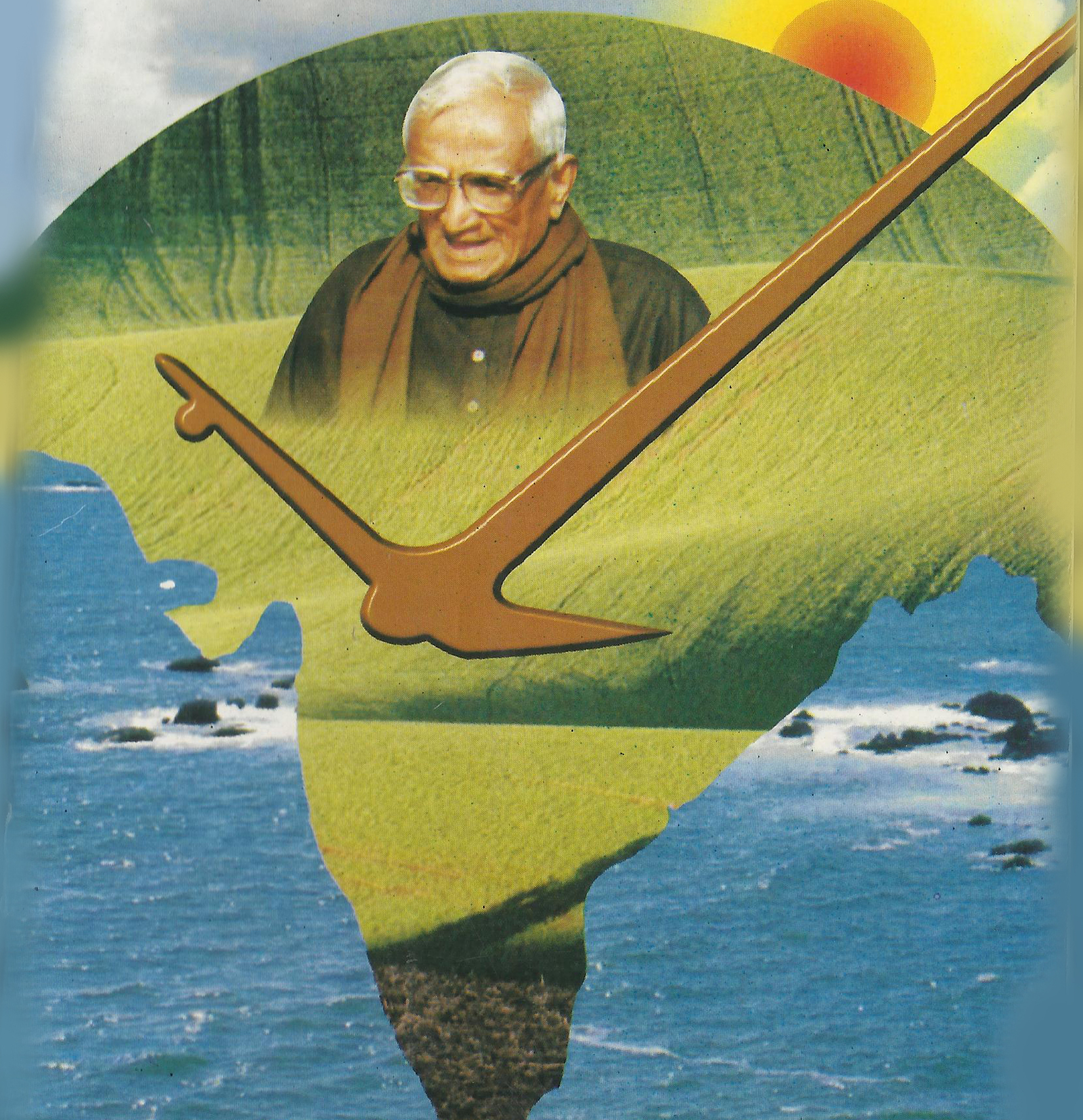

भारतीय किसान संघ-मेरठ प्रान्त

राष्ट्रीय महाधिवेशन के प्रमुख वक्तागण

श्री सुरेन्द्र सिंह चौहान
अ०भा० सह सेवा प्रमुख
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

श्री बाबासाहब तकबले
अ०भा० उपाध्यक्ष
भा० कि० संघ

ठाकुर संकठा प्रसाद सिंह
अ०भा० संगठन मन्त्री
भा० कि० संघ

कुंवर जी भाई जादव
अ०भा० अध्यक्ष भा०कि०संघ

श्री गौतम मोरारका
स्वागताध्यक्ष

श्री हुकुम चन्द साँवला
गौरक्षा समिति

श्री बाबूलाल वर्मा
अ०भा० महामन्त्री
भारतीय किसान संघ

श्री गुमान मल जी लोहड़ा
गौरक्षा समिति

मा० दत्तोपंत ठेंगड़ी
संस्थापक भा०कि०सं०

मा० सुरेशराव केतकर
मार्गदर्शक भा०कि०सं०

प०पू० सरसंघचालक जी के साथ केन्द्रीय अध्यक्ष, जम्बूद्वीप के मन्त्री एवं प्रान्त प्रचारक श्री रामाशीष जी

श्री तेलूराम जी
अध्यक्ष—उ०प्र०

श्री हरप्रसाद जी
संगठन मन्त्री—उ०प्र०

राष्ट्रीय महाधिवेशन की कुछ झलकियाँ–१

महाधिवेशन के सूत्रधार

यज्ञ एवं कार्यालय उद्‌घाटन

आवास व्यवस्था-निर्माण

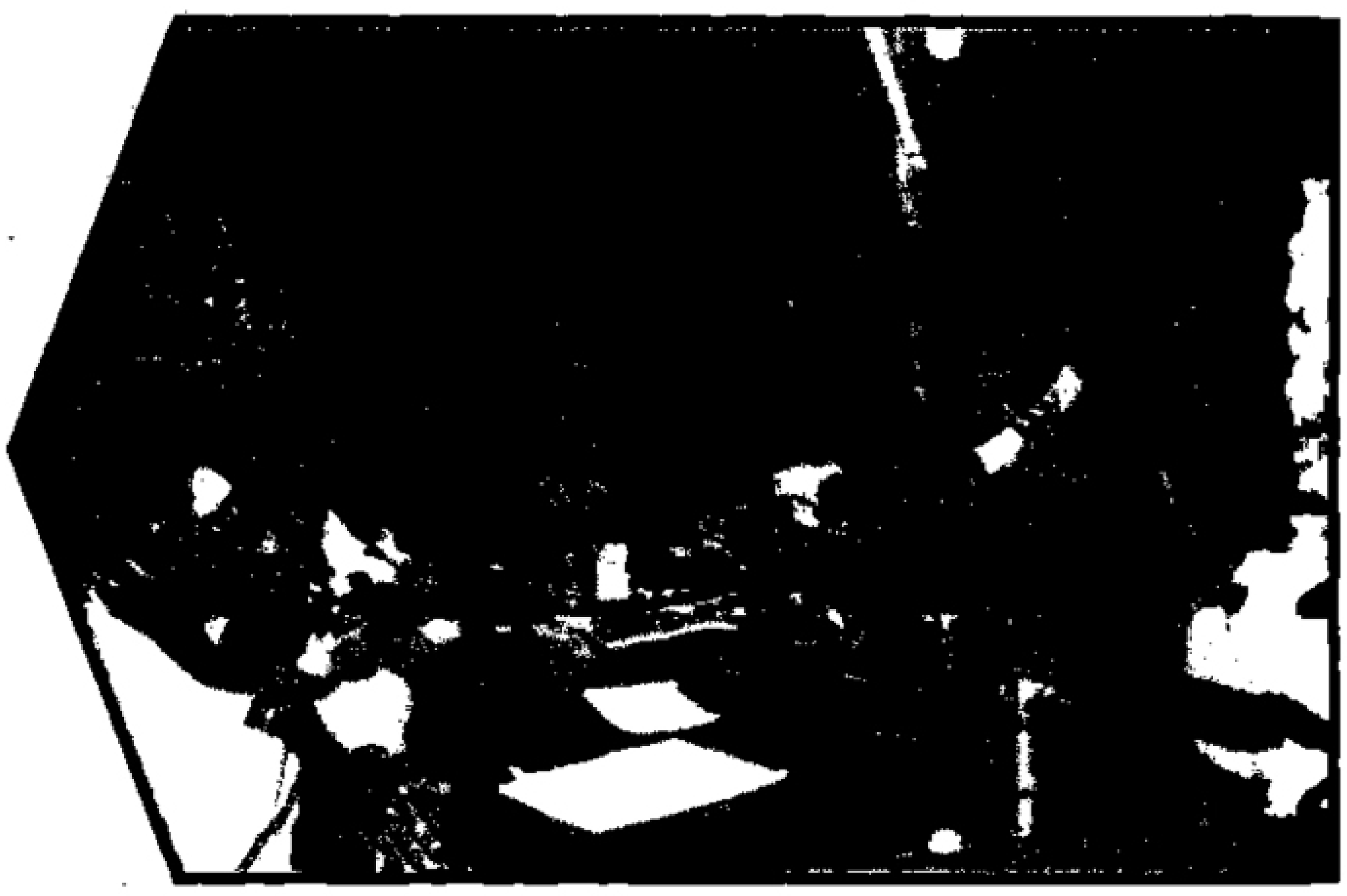

मुख्य कार्यालय से व्यवस्था-संचालन

सुरक्षा व्यवस्था में लगे कार्यकर्ता

किसान प्रतिनिधियों का आगमन

मुख्य कार्यक्रम स्थल पर भूमि पूजन

मुख्य कार्यक्रम स्थल को प्रस्थान

ॐ

किसान

चेतना

भारतीय किसान संघ के राष्ट्रीय महाधिवेशन-हस्तिनापुर (२५–२७ फरवरी, २०००) में दिये गये भाषणों का संकलन

संकलनकर्ता :

कृपाशंकर

मनोज

"केशव भवन", १०५, आर्यनगर

सूरजकुण्ड रोड, मेरठ–२५०००१

सहयोग राशि :

रुपये १०/- मात्र

प्रकाशन तिथि :

ज्येष्ठ कृष्ण नवमी सम्वत्

२०५७ युगाब्द ५१०२

तदानुसार २८ मई, २००० ई०

(सावरकर जयन्ती)

:: प्रकाशक ::

भारतीय किसान संघ-मेरठ प्रान्त

"शंकर आश्रम" शिवाजी मार्ग, मेरठ–२५०००१ ● दूरभाष : ०१२१–६५३१७७, ६४०८८०

अनुक्रमणिका

क्र०	विषय	पृष्ठ सं०
१.	**भारतीय किसान संघ - एक परिचय।** श्री हरप्रसाद सिंह, संगठन मंत्री, भारतीय किसान संघ, उ०प्र०	१–५
१.	**बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का कसता शिकंजा।** सुश्री बहिन वन्दना शिवा, पर्यावरणविद्	६–१४
२.	**भारतीय संस्कृति कृषि संस्कृति है।** प्रो० राजेन्द्र सिंह (प०पू० रज्जू भैया) सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ	१५–२०
३.	**गौ संरक्षण ही भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार।** श्री हुकुम चन्द जी सांवला	२१–२६
४.	**ग्रामोन्नति का मूल : ग्राम विकास।** श्री सुरेन्द्र सिंह चौहान, अ०भा० सह–सेवा प्रमुख, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ	२७–३४
५.	**किसान शक्ति का प्रकटीकरण।** मा० दत्तोपंत ठेगड़ी, संस्थापक, भारतीय किसान संघ	३५–४६

जय हलधर जय बलराम

भारतीय किसान संघ

एक परिचय

–हरप्रसाद सिंह
संगठन मन्त्री, भारतीय किसान संघ–उ०प्र०

उत्तर प्रदेश तथा विदर्भ में किसान संघ का कार्य १९६६ ई० में आरम्भ हुआ था। सभी संगठनों को अखिल भारतीय स्वरूप ४ मार्च सन् १९७९ ई० में राजस्थान के ऐतिहासिक नगर कोटा में प्राप्त हुआ, जब विश्व के महान चिन्तक एवं विचारक ऋषितुल्य माननीय श्री दत्तोपन्त ठेंगड़ी जी की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में प्रथम अखिल भारतीय अधिवेशन आयोजित किया गया, जिसमें तमिलनाडु और असम को छोड़कर देश के सभी प्रान्तों से किसान प्रतिनिधियों ने १५०० से अधिक संख्या में आकर भाग लिया था। इस अवसर पर भारतीय किसान संघ का एक सुविचारित संविधान स्वीकृत हुआ। भारतीय किसान संघ, किसानों के लिए निर्मित एक पूर्णतया अराजनीतिक संगठन है। किसानों में वे सभी लोग सम्मिलित हैं, जिनकी आजीविका कृषि पर अवलम्बित या आश्रित है।

भारतीय किसान संघ के कार्य :

भारतीय किसान संघ त्रिसूत्रीय सिद्धान्त लेकर कार्य कर रहा है।

१. **संगठन** : समग्र भारत में भारतीय किसानों का नित्य सिद्ध स्थायी संगठन का निर्माण करना।

   (क) **ग्राम पंचायत समिति** : प्रत्येक ग्राम पंचायत में कम से कम पच्चीस सदस्य बनाना आवश्यक है। सदस्यता शुल्क प्रति व्यक्ति एक रुपया वार्षिक है। सदस्य मिलकर ग्राम समिति की कार्यकारिणी का चुनाव करेंगे, जिसमें एक अध्यक्ष, एक उपाध्यक्ष एक मंत्री तथा चार कार्यकारिणी सदस्य; इस प्रकार सात सदस्यों की कार्यकारिणी गठित होगी। इसके अतिरिक्त दो विकास खण्ड प्रतिनिधि भी ग्राम समिति के द्वारा चुने जायेंगे।

   (ख) **विकास-खण्ड समिति** : प्रत्येक ग्राम समिति से दो–दो प्रतिनिधि मिलकर पूरे विकास खण्ड की साधारण सभा बनेगी। (विकास खण्ड समिति का

गठन होने के पूर्व पूरे विकास–खण्ड की कम से कम दस ग्राम समितियां बनना अनिवार्य है, तभी विकास खण्ड समिति का गठन होगा) जिनमें साधारण सभा नौ सदस्यों की प्रबन्धकारिणी समिति का चुनाव करेंगी। नौ सदस्य आपसी सहमति से अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, मन्त्री, सहमन्त्री एवं कोषाध्यक्ष का चुनाव करेंगे, शेष जो बचेंगे वह कार्यकारिणी के सदस्य होंगे।

(ग) **जिला समिति :** प्रत्येक विकास खण्ड के नौ–नौ सदस्यों को मिलाकर जिले की साधारण सभा बनेगी (जिला समिति का गठन होने के पूर्व पूरे जिले की कम से कम पांच विकास खण्ड समितियां गठित होना अनिवार्य है), यह सब मिलकर एक अध्यक्ष, एक मन्त्री, एक कोषाध्यक्ष का चुनाव करेंगे। अध्यक्ष, मन्त्री एवं कोषाध्यक्ष मिलकर आपसी सहमति से दो उपाध्यक्ष, दो सहमन्त्री तथा चौदह कार्यकारिणी सदस्यों का चुनाव करेंगे। इस प्रकार जिले की २१ सदस्यों की कार्यकारिणी समिति बनेगी। इसके अतिरिक्त जिले की साधारण सभा चार प्रान्तीय प्रतिनिधियों तथा जिले के प्रति १००० सदस्यों पर एक प्रतिनिधि के हिसाब से राष्ट्रीय प्रतिनिधि भी चुनेगी।

(घ) **प्रान्तीय समिति :** प्रान्त भर के प्रतिनिधि प्रान्त समिति का गठन करेंगे।

(ङ) **राष्ट्रीय कार्यकारिणी :** देश भर के राष्ट्रीय प्रतिनिधि, राष्ट्रीय कार्यकारिणी का गठन करेंगे।

२. **संघर्ष :** जब शासन के वरिष्ठ अधिकारियों के भिड़न्त करने के बाद भी किसानों की समस्या हल नहीं होती तो उनके लिए किसानों को संघर्ष के लिए तैयार करना। भारतीय किसान संघ, देशभक्त किसानों का संगठन होने के कारण राष्ट्रहित में किसान का हित व किसान के हित में राष्ट्र का हित है, यही समझकर अहिंसक तरीके से हमेशा संघर्ष करता आया है।

३. **रचनात्मक कार्य :** ग्रामीण विकास के लिए किसान संघ हमेशा से कार्यरत रहा है। किसान वैज्ञानिक पद्धति अपनाकर, अपनी आय कैसे बढ़ायें, इसके लिए अभ्यास वर्ग करना और सरकारी कृषि संस्थाओं का लाभ किसान कैसे उठायें, इसकी जानकारी देना ताकि बिना जाति, धर्म, लिंग व प्रजाति का भेदभाव किये किसानों के हित के लिए विभिन्न आयोजन करना और राष्ट्रभक्त किसानों को संगठित करना, ग्रामीण कुरीतियां दूर करना एवं किसानों तथा ज़नता के अन्य वर्ग के मध्य सदस्यतापूर्ण वातावरण तैयार करना और ग्रामीणपरकता तैयार करना इत्यादि रचनात्मक कार्य भारतीय किसान संघ का दायित्व है।

उद्देश्य :

(क) राष्ट्रहित कार्यों में सहयोग देकर प्रत्येक किसान अपने राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति के लिए उन्मुख हो, ऐसा वातावरण बनाना। राष्ट्रहित किसान हित से ऊपर है, इसीलिए किसान संघ का नारा है कि 'देश के भण्डार भरेंगे, लेकिन कीमत पूरी लेंगे।' अपने उत्पाद का लाभकारी मूल्य मांगते हुए कोई भूखा न रहे, इस भाव को रखते हुए अन्न के भंडार भरने की इच्छा रखता है। अन्य दलों की भांति "हमारी मांगें पूरी हों, चाहे जो मजबूरी हो" राष्ट्र के अहित का नारा नहीं लगाता है।

(ख) स्वदेशी बन्धुओं के पालन–पोषण के उत्तरदायित्व का अनुभव करना।

(ग) कलुषित स्वार्थों के संघर्ष से उत्पन्न वर्ग संघर्ष के स्थान पर मानवीय स्वभाव के अनुसार कथित वर्गों का समन्वय तथा पारिवारिक भावों का निर्माण में सहायक होना। किसान संघ समूचे गांव को एक परिवार मानकर चलता है। जब तक ग्राम परिवार के सभी अंग एक साथ नहीं रहेंगे तथा पारिवारिक वायुमण्डल को स्वस्थ नहीं रखेंगे, तब तक ग्रामीण जीवन के देर सबेर नष्ट होने का खतरा बना रहेगा। इस खतरे को दूर रखने के लिए कमजोर वर्ग की ओर विशेष ध्यान देना होगा। जैसे किसी, परिवार में बच्चा, बुजुर्गों और अपंगों की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है।

(घ) परस्पर की पोषणता के आधार पर कृषि, गोरक्षा, वाणिज्य तथा कृषि सम्बन्धी सहयोग का विकास करना।

(ङ) सामाजिक जीवन में आशा उत्साह की प्रेरणा के लिए विभिन्न खेलों, स्वास्थ्य मंडलों, कथाओं तथा तथा व्यायामशालाओं का आयोजन करना।

(च) समाज सेवा के अनेक क्षेत्रों में कार्यरत अनुभवी कार्यकर्ताओं अथवा कृषि विशेषज्ञों को आमन्त्रित कर उनका मार्गदर्शन प्राप्त करना तथा उनका स्वागत अभिनन्दन करना।

(छ) किसान के सभी हितों की रक्षा व्यवस्था करवाना, जैसे–बीज, खाद, पानी, बिजली, गांव को पक्की सड़कों से जोड़ना तथो प्राप्त करना तथा उनका स्वागत अभिनन्दन करना।

(ज) अपने विचारों से समाज को अवगत कराने तथा सामाजिक समस्याओं के निवारण हेतु उत्तम और आवश्यक सामग्री का प्रकाशन करना।

(झ) खेतिहर मजदूर अपनी उचित मजदूरी कैसे प्राप्त करें तथा खाली समय में लघु उद्योग कैसे चलावें, इसके लिए उन्हें प्रशिक्षित करना।

(ञ) कृषि उन्नति के लिए योजनाओं की पूर्ति हेतु सरकार से सहयोग प्राप्त करना तथा उसको सहयोग देना। कृषि को आर्थिक रूप से लाभकारी बनाने के लिए राजकीय सुविधाओं को किसानों तक पहुंचाने में सहयोग करना, उनको जानकारी देना, नवीनतम तकनीक, खाद, बीज, कृषि उपकरणों के बारे में जानकारी देना तथा कम कीमत पर उपलब्ध हो, ऐसी व्यवस्था करने के लिए प्रयास करना।

(ट) प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सरकारी कार्यालयों व मंडियों में हो रहे शोषण को बन्द कराने के लिए चेतना जागृत करना।

(ठ) किसानों में जाति–पांति व राजनीति का भेदभाव मिटाकर उन्हें अपने समान हितों की रक्षा के लिए संगठित करना।

(ड) भारतीय समाज में किसानों के प्रति आदर व निष्ठा का भाव पैदा हो, इसके लिए जन भावना जागृत करना।

किसान संघ की मुख्य मांगें

१. राष्ट्रीय कृषि नीति घोषित हो।

२. केन्द्रीय बजट का केन्द्र बिन्दु गांव और कृषि हो।

३. धरतीपुत्र किसान भूमि का मालिक बने।

४. कृषि न्यायालय स्थापित हों।

५. दोहरी मूल्य नीति समाप्त हों।

६. कृषि में प्रयुक्त होने वाली सभी वस्तुयें पेट्रोलियम पदार्थ तथा रासायनिक उर्वरक आदि विश्व बाजार भाव पर उपलब्ध कराये जायें।

७. कृषि उपज का मूल्य निर्धारण आधार 'स्वर्ण मुद्रा मानक' माना जाये।

८. किसानों को जोत बही दी जाये।

९. गौहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया जाये।

१०. गन्ना उत्पादकों का शोषण रोकने तथा उनकी समस्याओं के प्रभावी निदान के लिए तत्काल कदम उठाया जाये।

११. निःशुल्क जल प्रबन्ध किया जाये तथा हर खेत को पानी पहुंचाने की व्यवस्था हो।

१२. सरकार डंकल मसौदे के तहत किये गये नये विश्व व्यापार समझौते को तोड़ ले तथा देश हित में डंकल प्रस्ताव को रद्द करे।

१३. बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार हो तथा स्वदेशी उत्पाद को प्रोत्साहन मिले।

१४. बिजली समस्या का प्रभावी निदान हो।

उपरोक्त के अतिरिक्त अन्य अनेक मांगें भी किसान संघ किसानों के हित में उठाता रहा है।

भारतीय किसान संघ के प्रमुख नारे

१. देश के भंडार भरेंगे लेकिन कीमत पूरी लेंगे।

२. जब तक सुखी किसान न होगा, भारत का उत्थान न होगा।

३. जब तक दुःखी किसान रहेगा, भारत में तूफान रहेगा।

४. सस्ती–बिजली, सस्ता–पानी माँग रही है आज किसानी।

५. किसान–किसान, भाई–भाई राजनीति की तोड़ी खाई।

६. जो किसान हित काम करेगा, वही देश पर राज करेगा।

७. भूमि हीन को रोजी–रोटी, गांवों को उद्योग मिले।

८. सस्ती बिजली, कम लगान हो, कृषि यन्त्रों के दाम घटें।
लागत जोड़ों, तब कीमत दो, तभी गरीबी रोग कटे।।

९. भारतीय किसान संघ, जिन्दाबाद–जिन्दाबाद।

१०. किसान एकता, जिन्दाबाद–जिन्दाबाद।

११. फसल हमारी, खेत हमारे, दूर हटो डंकल हत्यारे।

❑

उद्‌घाटन सत्र

बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का कसता शिकंजा

—बहिन वन्दना शिवा

हम सबके प्रेरणा के स्रोत दत्तोपंत जी, कुंवर जी भाई एवं किसान संघ के सभी कार्यकर्ता भाई, मेरी किसान बहिनें और किसान भाई इस पूज्य तीर्थ में आपके साथ शामिल हो पाये, यह मेरा सौभाग्य है। इसके लिए आप तो देश के भण्डार भर रहे हो, लेकिन कीमत पूरी नहीं मिल रही और कीमत इतनी कम मिल रही है कि हमारे हजारों किसान भाई और बहिनें आत्महत्या कर रहे हैं। इस पृथ्वी में किसान आत्महत्या कर रहे हैं, तो ये स्वतन्त्र देश नहीं है। जब तक यहां के किसान पूरी कीमत नहीं लेंगे तब तक भारत की स्वतन्त्रता बची नहीं रहेगी।

एक ही मेरे लिए इन्डीकेटर है कि ये स्वतन्त्र देश है, यहां की धरती स्वतन्त्र है, यहां की मिट्टी स्वतन्त्र है और यहां के किसान स्वतन्त्र हैं। तीन तरह की वजह से इतनी कोशिश के बावजूद न तो हमारे भंडार भर रहे हैं। अभी नया आंकड़ा निकला है कि ग्रामीण भारत में पिछले दस साल के अन्दर जहां पहले लोग बहुत कम खा रहे थे, १२ प्रतिशत और कम खा रहे हैं। जो एक बार रोटी खाकर और मेहनत करके बाकियों को खिला रहे थे, अब उनकी खाने की मात्रा और कम हो गई है। क्योंकि उनको पूरी मेहनत नहीं मिल रही। सबसे पहली बात है भारत की मिट्टी, जिसे अन्न पैदा करना चाहिए उसका इस्तेमाल हो रहा है पश्चिमी देशों के लिए गुलाब पैदा करने में, सींगरी मछली पैदा करन में। गुलाब की खेती यू०पी० में बड़ी फैलाने वाले हैं। हमारे देश में भी फूल उगाये जाते हैं, हमने भी गेंदा, गुलाब उगाये हैं परन्तु उन्होंने कभी हमारी धरती को क्षत–विक्षत नहीं किया। आज गुलाब की खेती, क्यूलब्स की खेती, डेफुडिल की खेती, ग्लैडियोलाई की खेती एक गांव में फ्लोरिकल्चर यूनिट बारह गांवों का पानी खींचे ले रही है। पूरे देश के ७००० किमी के कोर्स लाइन पर सींगरी मछली की खेती की वजह से पानी नमकीन हो गया है। प्रदूषण इतना हो गया है कि सागर में मछलियां मर रही हैं। सारे जंगल जो मैनरों के जंगल थे, वे तहस–नहस हो गये हैं। अभी उड़ीसा में साइक्लोन आया था, इसमें हमारे ३५,००० किसान भाई मरे, वे इसलिए मरे कि तूफान को रोकने वाले जंगलों को काट दिया गया था। बार–बार हमसे विश्व बैंक कहता है, हमारा सारा मंत्रालय कह रहा है कि भारतीय किसान को गेहूं नहीं पैदा करना चाहिए, इन्हें पश्चिमी देशों

को एक्सपोर्ट करने के लिए लक्जरी गुड्स पैदा करने चाहियें। वो किसान नहीं पैदा करता वो कम्पनियां पैदा करती हैं। कर्नाटक में जितने फ्लोरीकल्चर यूनिट आये हैं उन्होंने दलित किसानों को सबसे ज्यादा उखाड़ा है। अगर सीधे–सीधे वे जमीन नहीं बेचते तो बन्दूक से डराकर उन्हें जमीन बेचने के लिए बाध्य किया जा रहा है।

दूसरी चोरी है कि भारत के किसान ने अपना बीज उगाया है तथा बचाया है परन्तु आज बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के बीज हमारे यहां देशी कम्पनियों के नाम से बिक रहे हैं। परन्तु देशी कम्पनियां उन्हें कंट्रोल नहीं कर रही हैं। महीको अब कहीं का नहीं रहा अब वह मुन्साइटोका बन गया है। जिन देशी कम्पनियों के बीज आपके द्वारा खरीदे जा रहे हैं, वे असली बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के बीज हैं। और आप भी जानते हैं कि आपकी फसल कितनी बार नष्ट हो रही है। ये संकरित बीज हैं। वे आपको बताते नहीं है कि अगली बार आप बीज बचा नहीं पाओगे। आप पहले की तरह इसे बचाते तो फसल नहीं आती और आप नहीं बचाते तो स्वयं आप ही समझ लीजिये एक बीज पर जब कुछ भी खर्चा नहीं आता था उसी बीज पर अब एक हजार, दो हजार, टमाटर पे तो तीस–तीस, चालीस–चालीस हजार प्रतिकिलो खर्चा आता है और उसी का नहीं वे ही कम्पनियां जो आपको बीज बेच रही हैं, वे ही आपको कीटनाशक भी बेच रही हैं और उनके बीज क्योंकि कीटनाशक के बिना फसल नहीं दे सकते, तो आप भण्डार कहां से भरोगे? जब आपकी जेब का एक–एक पैसा इन कम्पनियों के पास जा रहा है और कृषि के तकनीक इस प्रकार से बनाये जा रहे हैं कि किसान उत्पादन के बजाय खरीददार बनकर रह जाये और उस पर इतना ऋण हो जाये कि वह किसान आत्महत्या के लिए बाध्य हो जाये। आपको याद होगा एक–डेढ़ साल पहले वही मुन्सेन्टो के बीज से बने पौधे उखाड़े गये थे क्योंकि वे जैनेटिक इंजीनियरिंग के बने हुए थे। वे ही बीज अपनाये जा रहे हैं जिनमें कीटाणुओं के जीन्स डाले गये थे तथा अब साँप व चूहों के, यहां तक की बिच्छुओं के जीन्स डालकर बेचना चाह रहे हैं। साँप–बिच्छू के जहर में जीन्स इसलिए डाले जा रहे हैं ताकि पौधा अपना जहर पैदा करेगा तो उसे कीटनाशक की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। पर कीटनाशक हमारा पौधा ही स्वयं हो रहा है तो हमारे खाने का क्या होगा, जीव–जन्तुओं का क्या होगा?

आजकल विज्ञान समाचारों में निकल रहा है कि मधुमक्खियां मर रही हैं, जमीन में अर्थवार्म मर रहे हैं, माइक्रोऑर्गेनिज्म मर रहे हैं। ये सभी इन नये बीजों की वजह से मर रहे हैं। हमारा जो अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलन, जो हमने खड़ा किया है

उसकी वजह से इस साल ५० लाख एकड़ कम खेती हुई है। हम जानते हैं कि अमरीका ताकतवर है, परन्तु हम भी उसे सबक सिखा सकते हैं कि हमको खेती ऐसी करनी है जो जमीन बचाये, किसान को सुरक्षित रखे, अगर ये दोनों सुरक्षित नहीं हैं तो हमें ऐसी खेती नहीं करनी।

एक और तरीका है किसान से चोरी करने का। वह तरीका है पेटेन्ट कानून। बीज हमने बनाये और इस धरती ने हमें दिये। राइसटेक जिसने हमारे देहरादूनी बासमती चावल पर पेटेन्ट किया है। यारग्लेस जिसने नीम के इस्तेमाल पर पेटेन्ट किया है और अन्य कम्पनियां हैं, जैसे–हल्दी, काली मिर्च, रोजमर्रा के इस्तेमाल की कुछ भी चीज ले लीजिये, जो आप उगाते हैं आज अमरीका में हर चीज पर पेटेन्ट है। पेटेन्ट का मतलब अधिकार, कि हमने नया आविष्कार किया, ये हमारी सम्पत्ति है। इसे कोई उगा नहीं सकता। बना नहीं सकता, बेच नहीं सकता। अगर बीज व पौधों पर पेटेन्टीकरण हुआ था इसके जो इनके भौतिक सम्पदा कानून इन्टलैक्चर प्रोपर्टी राइट कहकर विश्व व्यापार संगठन के कानूनों के द्वारा लगाये जा रहे हैं। जो भारतीय सरकार ने सिएटल में हुई बैठक के बावजूद हाल की सरकार ने जो हारे हुए अन्तर्राष्ट्रीय कानून हैं उनको भारत में लागू किया है। कोशिश है कि वे करेंगे और अभी तक तो और नहीं करने दिया है। और आप अपनी शक्ति से कभी नहीं करने दोगे। इस देश में अगर बीज पर पेटेन्ट है और अगर बीज को पेटेन्ट (अधिकार) माना जा रहा है तो किसान द्वारा खेत से उत्पन्न बीज चोरी कहलायेगा। ये कानून बनाने की कोशिश है। आर्टिकल ३१ नया कानून बनाया गया है। उसमें है कि किसान अपना अनाज बेच पायेगा पर अपना बीज नहीं बेच पायेगा और यदि बीज हर साल आपको खरीदना पड़ेगा तो आपको पूरी कीमत कहां से मिलेगी। आप तो रायल्टी चुकाते–चुकाते खत्म हो जाओगे। हम क्यों रायल्टी दें जब बीज व पौधे हमें प्रकृति ने दिये हैं और हमारे पूर्वजों ने इन्हें उन्नत किया है। इन सभी पर हम कभी निजी सम्पत्ति कानून लागू नहीं होने देंगे।

एक और चोरी जो आपकी कीमत पूरी नहीं होने दे रही है, वह है हम जिसे असली अपहरण मानते हैं। जब दिसम्बर में पूरा देश व्याकुलता में डूबा था क्योंकि काठमांडू से इन्डियन एयरलाइन्स का जहाज अपहृत कर लिया गया था और अफगानिस्तान ले जाया गया था। चौबीसों घंटे स्टार टी०वी०, जी टी०वी०, दूरदर्शन इत्यादि बस उसी हवाई जहाज को दिखा रहे थे और कोई नहीं दिखा रहा था कि अमरीका के कामर्स डिपार्टमेंट ने भारत सरकार को एक चिट्ठी लिखी थी कि आप

सारे आयातों पर (जिनपर रुकावट है) से रुकावटें हटाओगे, जिससे हम अपनी चीजों को आपके बाजार में बेच पायें। असली अपहरण तो ये था और भारत सरकार ने कहा कि जी हुजूर, जो आप कहते हैं हम मान लेंगे। बस एक बात याद रखना, हमारी जनता व पार्लियामेन्ट को जानने न देना कि इस वक्त हमारा देश अमरीका व वाशिंगटन से चल रहा है। और वाशिंगटन को चला रही है ५ बहुराष्ट्रीय कम्पनियां तो उनके लिए नीति बनेंगी, भारत के किसानों के लिए नहीं। ५ कम्पनियां कौन सी हैं? एक है करगिल जो इस वक्त दुनिया का ७० प्रतिशत अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार उसके कब्जे में है। इस कम्पनी के सैटेलाइट्स हैं यह ऊपर से देख सकती है, यहां कैसी फसल हुई है, इसके लाखों हवाई–जहाज हैं, पानी के जहाज हैं, रेलवेज ट्रेक्स हैं, इसका अपना एक प्राईवेट पोर्ट है और इस कम्पनी से ही विश्व व्यापार कम्पनी में ही रूयूल्स और एग्रीमेन्ट होना है, दुनिया भर के बाजार पर काबू करना है। हम अपने रूयूल्स बनायेंगे। हमारे रूयूल्स आप दुनिया भर में लागू करवा दो। अमरीका सरकार ने कहा ठीक है, आप अपना अफसर हमारे साथ लगवा दीजिये, वही लिखेगा। तो आज भारत सरकार कह रही है हमें डब्लू०टी०ओ० की वजह से यह करना है और विश्व व्यापार संगठन की वजह से यह करना है। असल में उन्हें कहना चाहिए, हमें करगिल कम्पनी की वजह से यह करना है। क्योंकि विश्व व्यापार संगठन के रूयूल्स करगिल के लिए लिखे गये हैं। करगिल ने लिखे हैं। हम कहते थे लोकतंत्र है, रूल बाई दा पीपुल, ऑफ दा पीपुल, फॉर दा पीपुल, ये जो ग्लोबलाइजेशन चला है, ये रूल बाई दा कारपोरेशन, ऑफ दा कारपोरेशन, फॉर दा कारपोरेशन है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के लिए दूसरी बहुराष्ट्रीय कम्पनियां हैं। मुन्सैन्टो, इसने दुनिया के सारे बीज उद्योग खरीद लिये हैं। उसने बीज उद्योग खरीदे हैं, बाजार से ३० गुना, ४० गुना बाजार के रेट से अधिक है। और ये मानकर कि अगर हम बीज का अकाल कर देंगे तो सारी जायदाद वापस ले लेंगे। क्योंकि बीज तो लोगों को खरीदना ही है। करगिल भी इसी तरह व्यापार करता है। करगिल ने नोयडा में यू०पी० की मिल थी, उसे खरीद लिया, पंजाब की सरकार के साथ मिलकर इसने ४ मण्डियों पर कब्जे का एग्रीमेन्ट लिखकर दे दिया है।

एक छोटे से अखबार ने आयटम निकाला था कि विटामिन ए रिच्ड आटा ही बाजार में बिके और वह पैकेटों में ही बिके। आज जो किसानों से गेहूं बिकता है, दूर–दूर शहरों में बिकता है। लोग गेहूं से चक्की पर आटा पिसवाते, कम्पनियों ने कहा कि इसे हम कभी भी बीट नहीं कर पायेंगे। इस लिए हम रूल बनायेंगे कि बस

पैकेज आटा ही बिके और उसको हम सस्ता ऐसे बनायेंगे कि हम किसान को बाध्य कर देंगे, उसी को हम बीज देंगे, उसी को कैमिकल्स रसायन देंगे और उसी से अनाज खरीदेंगे और सस्ता खरीदा अनाज ऊंचे दामों पर पैकेज करके बेचेंगे।

साथ–साथ नये रूल बनाये जा रहे हैं कि आप बिना आयोडीन के नमक सीधे नहीं खा सकते। आप आटा सीधे नहीं खरीद सकते, जिसमें विटामिन न हों। परन्तु विटामिन–ए तो गेहूं में स्वयं ही होता है। पहले ये कम्पनियां उसे निकालकर अलग बेचती हैं फिर थोड़ा सा विटामिन–ए उसमें डाल देती हैं। चोकर आटे का महत्वपूर्ण अंग है, वे उसे अलग निकालकर बेच रहे हैं तथा उसके स्थान पर लकड़ी का बुरादा, ११ प्रतिशत लकड़ी का बुरादा प्रयोग किया जा रहा है और कहते हैं ये साइबर ए नेस्ट आटा है। दिल्ली के छोटे–छोटे लोग जो चाय बना रहे हैं उनको कह दिया ये लोग हजिट, क्रियेट कर रहे हैं। ये गाय को उसका मांस बढ़ाने के लिए मरी हुई गाय खिला रहे हैं, जिससे इनकी गाय पागल हो रही हैं और उनसे आप कह रहे हैं अपना मीट आयात करो। और आप अपनी आइसक्रीम में जैलीज में ये लगाओ और लेबल करके मत बताओ की खाने में क्या है। कल ही यहां पढ़ रहे थे कि जो आयरन टानिक्स बना रहे हैं वो महिलाओं की सबसे बड़ी बीमारी है, जो आयरन की कमी से होती है। "अनीमिया" इसके लिए आयरन की आवश्यकता रहती है। ये गुड़ में होता है तथा कढ़ाई में बनी सब्जी में होता है। एक टॉनिक बनवाकर बिकवाना चाह रहे हैं। ये भैंस को मारकर उसके खून से बनाया जा रहा है और जो खरीद रहा है वह अपनी बहू–बेटियों को तथा स्वयं भी ले रहा है, क्योंकि कोशिश है कि विश्व व्यापार में जनता को पता नहीं चलना चाहिए कि खाने के अन्दर क्या है। खाना कहां से आया है, कहां उगा था, किस दाम में उगा था। बार–बार हमें बताया जाता है कि अगर सोयाबीन का आयात ३०० प्रतिशत बढ़ा और वो इसलिए बढ़ा कि पहले सरसों को बन्द रेट करके रखवा दिया। हमारी मूंगफली खत्म कर रहा है, कोकोनट का मामला तिलहन खत्म कर रहा है। हमारी खेती को कम कर रहा है और कहा जा रहा है कि कम्पटीशन है और भारतीय किसान को कम्पटीशन का सामना करना चाहिए। बार–बार बताया जाता है कि अमरीका का किसान सस्ती उपज पैदा करता है इसलिए सस्ता अनाज आता है। अमरीका के किसान की खेती बहुत महंगी है, और वहां का किसान भी आत्महत्या कर रहा है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियां किसान से सस्ता खरीदती हैं और फिर बाजार में और सस्ता करके बेच रही हैं। क्योंकि अमरीका की सरकार उनको अरबों रुपये

की सब्सिडी दे रही है। और मैं आपको सब्सिडी के आंकड़ें दूं। सोयाबीन का पिछले साल अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर रेट ७०००/– टन था। उसके ऊपर सब्सिडी ६००० रुपंये थी। और इसी कारण सोयाबीन सस्ता आया और उसने आपकी मूंगफली तथा सरसों के दाम गिरा दिये। ये सच्ची कीमतें नहीं हैं। ये झूठी कीमतें हैं।

बार–बार बताया जाता रहा है कि विश्व व्यापार संगठन की वजह से सब्सिडी कम हो जायेगी। इसलिए भारत के किसान का बाजार बढ़ेगा और उसको अच्छी कीमत मिलेंगी। जब से विश्व व्यापार संगठन की स्थापना हुई तब से अमरीकी सब्सिडी उनकी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के लिए खेती–खेती के, कृषि–कृषि के लिए ४०० अरब रुपयों से ७०० अरब रुपये बन गई है। और किसान को कहा जा रहा है कि हिमालय से गंगा मां का पानी आपके खेत में पहुंच रहा है। गंगा का पानी हिमालय दे रहा है, धरती दे रही है तथा बर्फ दे रही है, ये सरकार नहीं दे रही, कोई कम्पनी नहीं दे रही है। इस बहाने कर लगना चाहिए पानी और और किसान को सस्ता पानी मिल रहा है।

अब नई बात शुरू हो रही है। कल अमरीका के दूत ने दिल्ली में कहा जब क्लिंटन साहब आयेंगे तो पर्यावरण बचायेंगे, इस देश को सिखायेंगे कि पर्यावरण को कैसे बचाया जाता है? और वे बचायेंगे कैसे कि पानी का निजीकरण कर दो। गंगा एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी होगी। कावेरी दूसरी बहुराष्ट्रीय कम्पनी होगी तथा जमीन का पानी और किसी बहुराष्ट्रीय कम्पनी का होगा। विश्व बैंक ने दो हफ्ते पहले ऐसी पॉलिसी शुरू की है और सरकार ने उन्हें कह दिया है कि एक हफ्ते के अन्दर अपनी सारी नीतियां बदल देंगे। अखबार में आया है कि जो पानी स्टेट की रेग्यूलेशन में है, आज उसे कंकरन लिस्ट में मूव करवा दिया है। जो कि २५ चीफ मिनिस्टरों के साथ बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को लेन–देन करना पड़े। एक ही प्राइम मिनिस्टर सैक्रेटियर को ढूंढ़ लेंगे और फिर निजीकरण कर देंगे। मेरा मानना है कि मुझे प्रकृति से लगाव है, मेरी जिन्दा रहने की प्रेरणा वहीं से आती है कि पानी निजी सम्पत्ति नहीं रह सकता, ये जिन्दा रहने का आधार है। इसका अधिकार हर एक के पास होना चाहिए। छोटे से छोटे किसान का, जिसके पास पैसा नहीं है, जो दिल्ली के अखबार हैं, जो भारत के विषय में सोचना ही नहीं जानते, उनको पता ही क्या कि भारत का ग्रामीण इलाका कैसे जीता है, कैसे मरता है। अगर वे अपने को समझ लें कि वे कितने बुद्धू हैं परन्तु वे तो बहुत तेज समझते हैं वे बिना कुछ जाने कि भारत कैसे जी रहा है, वे कहते हैं कि अगर किसान से ज्यादा दिल्ली के लोग अपने

जितना पैसा उतना पानी, परन्तु हम कहते हैं पानी जीवन का आधार है। इसलिए प्रत्येक के पास उसका हक होना चाहिए। उसे बचाने का ढ़ंग भी होना चाहिए। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की यह एक और प्रोपर्टी नहीं हो सकती। अभी यू०पी० में विद्युत विभाग की स्ट्राइक चली थी। बार–बार कहा गया था कि हम पावर का विद्युत बोर्ड सारी स्ट्रैक्चरिंग इसलिए कर रहे हैं कि एफीसियेंसी नहीं है। लोग विद्युत की चोरी कर रहे हैं। अभी हाल में ही ऊर्जा मन्त्रियों ने बड़े–बड़े स्टेटमेन्ट्स न्यूज पेपरों को दिये थे, कि वे ग्रामीण इलाकों में बिजली पहुंचायेंगे इसलिए सारा रीस्टैक्चरिंग कर रहे हैं। आपको यह नहीं बता रहे हैं कि विश्व बैंक के रीस्ट्रैक्टलैजेस्टमेंट प्रोग्राम, जिनकी वजह से रीस्ट्रैक्चरिंग हो रही है, उनमें सीधा लिखा गया है कि किसानों से ६ गुना ज्यादा बिजली का पैसा लिया जायेगा। अगर आज किसान पैसा पूरा नहीं दे पा रहा तो रीस्ट्रैक्चरिंग के बाद पैसा कैसे देगा और अगर ६ गुना पैसा बिजली के लिए देंगे तो पूरी कीमत कहां से मिल पायेगी। ये जो बिजली घर आपकी एवं हमारी मेहनत के बने हैं, ये राष्ट्रीय सम्पत्ति हैं। इनको सस्ते–सस्ते में बेचा जा रहा है। इधर कहा जा रहा है कि पैसा नहीं है, सरकार पैसे खाती है इसलिए निजीकरण हो रहा है पर निजीकरण के लिए वो ही सरकार इन कंपनियों को सब्सिडी खुद दे सकती है। कोजेन्ट्रिक्स को कह सकती है कि आप को बैंगलोर से भगा दिया था, आप भारत से मत जाओ। हम आपसे चौगुनी कीमत में बिजली खरीदेंगे और हम गारंटी देते हैं कि हम वो बिजली रुपयों में नहीं डालरों में खरीदेंगे। जिस सरकार के पास स्कूल चलाने के लिए, अस्पताल चलाने के लिए, यहां तक कि सरकार चलाने के लिए पैसा नहीं है, उसपर विदेशी कंपनियों को सब्सिडी देने के लिए पैसा कहां से आ रहा है?

हिन्दुस्तान लीवर्स के शेयर्स डबल हो गये, अभी हाल में ही खबर निकली थी। लीवर्स एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी है, उसने मॉडर्न बेकरी खरीद ली। माननीय दत्तोपंत ठेंगड़ी जी के नेतृत्व में आन्दोलन बहुत चला था कि ये ना बिके! प्राइवेटाइजेशन न हो। अब सीधे–सीधे हिन्दुस्तान लीवर ने कह दिया है कि हमारा असली फायदा है कि मॉडर्न बेकरी के द्वारा हम दूर–दूर जगह में अपने प्रोडक्ट बेच पायेंगे। सस्ते में भारत बिक रहा है। सस्ते में नीलामी हो रही है। बिना हमारे पूछे देश के पानी–मिट्टी, यहां तक कि पूरे देश की नीलामी हो रहीं है। मेरा मानना है कि धरती और ये देश नीलामी के लिए नहीं हैं। ये देश जिन्दा रखने के लिए है। इस देश की संस्कृति इस देश का धर्म जिन्दा रखने के लिए है, और वो कर्तव्य का

पालन हमको करना ही होगा। सियेटल ने जब हम लोग गये थे। जब विश्व व्यापार संगठन रोकने के लिए तथा हमारी अर्थव्यवस्था को अस्त–व्यस्त करने के लिए जो नये–नये कानूनों की होड़ सी लग गई थी। कोई नहीं समझता था कि हम उसे रोक सकते हैं परन्तु हम छोटे–छोटे लोगों ने इसे रोका। उसी तरह आज जो भारत में इन बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के लिए जो नीति बन रही है, उसको रोका जा सकता है। किसानों को जिन्दा रहने का अधिकार है और उन पर देश को जिन्दा रखने तथा धर्म को सम्पन्न रखने का धर्म है। और ये हमारे धर्म में बाधा डाल रहे हैं। हम उन्हें यह नहीं डालने देंगे। इसके लिए कुछ मुद्दे हैं, कुछ आन्दोलन की दिशायें हैं। एक कृषि को हम मुक्त कराने के लिए सारी व्यवस्था से हमें निकलना पड़ेगा। कृषि व्यापार नहीं, जीवन है। कृषि किसान को जिन्दा रखने के लिए धरती को जिन्दा रखने के लिए, देश को स्वतन्त्र रखने के लिए है। अगर किसी देश की फूड सिक्योरिटी नहीं है तो उसकी अपनी भी सुरक्षा नहीं है। आप कितना भी अपने रक्षा मंत्रालय का बजट बढ़ा लो और किसान को मरने दो, और आप सुरक्षित नहीं हो क्योंकि कल अमरीका कहेगा कि हम अगला जहाज नहीं बेचते, हम बीज नहीं बेचते और इन्होंने तो इस प्रकार के बीज का इवोल्यूशन किया है कि वह बीज पौधा ही नहीं बन सकेगा और अच्छी पैदावार ही नहीं दे पायेगा पर जो नया टर्मिनेटर बीज निकाल रहे हैं, उसका पेटेन्ट अमरीका के डिपार्टमेंट ऑफ एग्रीकल्चर के हाथ में है और जानबूझकर ऐसा बीज तैयार किया है कि अगर कोई देश अगर उसका कहना न माने तो अमरीका कहेगा नहीं बेचते हम अगले सीजन के लिए बीज आपके यहां, देखें क्या करोगे? तो कितने ही न्यूक्लीयर विस्फोट कर लो, कितने ही मशाल बना लो, एकदम झुकना ही पड़ेगा। हमें मांग करनी पड़ेगी और लड़ाई लड़नी पड़ेगी कि ये जो दो बाबुओं ने चिट्ठी बदलकर अमरीका का भारत समझौता किया है कि हमारे किसानों की बर्बादी हो, उनको मुक्त आयात से उसको रद्द करना पड़ेगा। क्योंकि लोकतन्त्र ऐसे नहीं चल सकता कि छुपे–छुपे दो बाबू लाखों के भविष्य को खत्म कर दें। बीज, पशु, पेड़–पौधे पेटेन्टीकरण के बाहर रहने चाहियें। हमारे कानून और अन्तर्राष्ट्रीय कानून में और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इसकी लड़ाई इतनी तेज हो गई है कि अफ्रीका के देशों के साथ, जिनके साथ मैंने काम किया, उन्होंने तो विश्व व्यापार संगठन को सीधे–सीधे कह दिया कि हमारे यहां सबसे ज्यादा लोग कृषि पर निर्भर हैं। हम बीज व पौधों का पेटेन्टीकरण नहीं होने देंगे। आप अपना कानून बदलो। आप हमको कानून मत बदलवाइयेगा। ये आपका क्या पागलपन है? आप

गिरी हुई संस्कृति के हो, जो आप प्रकृति की देन को अपना आविष्कार कह रहे हो। जीवन आविष्कार नहीं है और मनुष्य जीव–जन्तु किसी की निजी सम्पत्ति बनकर नहीं रह सकते। इसलिए जीव–जन्तु और जीवन ये ट्रेड विलेटिड इन्टलैक्चर प्रोपर्टी राइट जो भौतिक संपदाओं का कानून है, उसे बाहर लाना पड़ेगा। भारत सरकार बार–बार कहती है कि डब्लू०टी०ओ० को हमने साइन कर दिया, अब कुछ नहीं कह सकती, "झूठ हैं।" क्योंकि क्रिटस और कृषि के जो सल्स हैं वे रिव्यू में हैं। ये पक्के नहीं हैं, ये कच्चे हैं और इनका बदलाव भारत सरकार की जिम्मेदारी है, किसानों के हित में बदलाव करें। विश्व व्यापार संगठन की मैम्बर है हमारी भारत सरकार। अगर वह अड़ जाये तो कोई रूल नहीं जो हमारे किसान भाईयों को कुचल सके। और हमें दिखाना पड़ेगा इस सरकार को कि क्लिंटन की जी हुजूरी बन्द करने का समय आ गया है। भारत सरकार को भारत की अमूल्य संपदा जान की धरोहर किसानों की जीविका बचाने का भी ध्यान देना पड़ेगा। भौगोलिकरण के नाम पर भारतीय किसानों को जो लॉस हो रहा है, उसे रोकना है। भारत की सुरक्षा के लिए आप को भारतीय अन्न गोदाम भरने हैं। और इसके लिए जरूरी है आपको आपका पूरा प्राइस मिले।

सिएटल में शुरूआत हुई एक नई लोकशक्ति की कि जनता की शक्ति पूंजी की ताकत से सबसे ज्यादा है। अगर जनता के पास जानकारी हो जाये कि क्यों हो रहा है, क्या हो रहा है, और कैसे हो रहा है वो तो आपको व हमको बताया नहीं जाता, इसलिए हम फिजिक्स छोड़कर कोन्टिटेटिक रिस्ट्रिक्शन और डब्लू०टी०ओ० और कृषि के व्यापार के रयूल्स को पढ़ते रहते हैं, बहुत बकवास है परन्तु पढ़ना पड़ता है क्योंकि लोगों की जिन्दगी इससे जुड़ी हुई है, इसी भूमि में एक और महायुद्ध हुआ और महाभारत के पहले संजय ने कह दिया था कि जहां अर्जुन है, जहां कृष्ण है, वहा तो जीत निश्चित है। हम कहते हैं जहां माननीय दत्तोपंत जी हैं और जहां भारतीय कृषक भाई है, वहां तो जीत होनी ही है।

❑

भारत का किसान निरक्षर होने पर भी कृषि विशेषज्ञ की तरह चिन्तन और विचार करता है।

भारतीय संस्कृति कृषि संस्कृति है

-मा० रज्जू भैया

प०पू० सरसंघचालक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

ठेंगड़ी जी, कुंवर जी जाधव, बाबू लाल जी, मंच पर विराजमान अन्य बंधु, मैं केवल आप सब लोगों के दर्शन करने यहां आया हूं। जैसा ठेंगड़ी जी ने बताया, मैं पिछले एक साल से हड्डी टूट जाने के कारण से काफी अस्वस्थ था और आज भी अधिक देर बोलने की मेरी क्षमता नहीं है। इसलिए कोई मार्गदर्शन की बात, मुझसे अपेक्षित नहीं है। मैं जानता हूं कि आप सब बंधुओं ने मिलकर और कार्य में कितनी प्रगति की है पिछले कुछ वर्षों में उसको देखने के लिए ही आया था। ठेंगड़ी जी ने बताया कि हमारे पुराने सरसंघचालक तो काफी मात्रा में किसानी में रुचि रखते थे। मैं केवल किसानी के कार्य को महत्वपूर्ण समझकर और किसानों के दुखदर्द को जानने के कारण उनके प्रति बहुत आत्मीयता रखता हूं। चूंकि वे देश की रीढ़ की हड्डी का काम करने वाले हैं। देश की रक्षा सेना के लोग करते हैं। इसलिए जय जवान और जय किसान का नारा बुलन्द हुआ। किसान पीछे से सारे देश को संभालते हैं। सारे किसान बंधु सेना ने बड़ा कर्तव्य अभी दिखाया लोगों ने इसके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की, परन्तु किसानों की क्या समस्यायें हैं उनका अध्ययन करने वाले, गहराई से सोचने वाले और ऊपर तक अपनी बात पहुंचा सकें ऐसे चिंतनशील लोगों की आज बड़ी आवश्यकता है। कहने के लिए किसान संगठन हैं। परन्तु अधिकांश संगठन थोड़ी सी लोकप्रियता प्राप्त करने के बाद चुनाव में पहुंचने की सीढ़ी हैं। किसान संघ का जैसा अभी दत्तोपंत ठेंगड़ी जी ने बताया कोई ऐसा उद्देश्य नहीं है। इसलिए तमिलनाडू के, महाराष्ट्र के कोई नायडू साहब, कोई शरद जोशी जी जैसे काफी किसान जगत में चमके परन्तु क्योंकि राजनीति का उन्होंने रास्ता अपनाया, अपने लाभ की बात सोचने लगे तो उनको किसानों ने एक तरह से नकार दिया। आज तो उन प्रदेशों में भी जहां किसान मूवमेन्ट बड़े जोरों से चलता था, रिक्तता आ गई है और किसान संघ के लिए एक अच्छे कार्य करने की और एक मुहुर्त मिला है। मैंने जैसा कहा कि मैं कुछ बोलने के लिए विशेष नहीं आया। ये मैं बताना चाहता हूं, इस संगठन के एक बिन्दु को लेकर किसान संघ को हम एक प्लेटफार्म इसलिए नहीं मानते कि ये एक ऊपर चढ़ने के लिए सीढ़ी है और

किसान इसलिए किसान संघ के लिए कार्य करने वाले बड़े प्रयत्नपूर्वक, बड़े धैर्य के साथ पिछले बीस वर्षों से कार्य करते रहे। फिर भी कुछ चीजें अच्छी नहीं मिल पातीं। जब तक गहराई में नहीं जाता मनुष्य तब तक चीजों को समझ नहीं पाता, पहले तो दृष्टि हमारी भिन्न है, उसमें तो हम सब समान हैं इसलिए मुझे कुछ कहने का अधिकार है। दृष्टि है ये भारत माता ये हमारी माता है। जैसे हम गौमाता के प्रति भावना रखते हैं, उसको दोहते हैं, वी मिल्क दी काऊ। हम उसका शोषण नहीं करते। शोषण और दोहन में अन्तर है। हम देखते हैं कि बछड़ा अभी छोटा है, दो थन लेते हैं। हम भी गौ माता के पुत्र के लिए दो थन छोड़ देते हैं। थोड़ा बड़ा हो गया तो एक थन छोड़ते हैं। बाकी के समय भी गौमाता को दोहते समय गौ माता को कोई कष्ट नहीं देते। कोई व्यापारी होगा तो वो उसका उपयोग एक माता के रूप में नहीं सोचता तो वो उसके इंजेक्शन लगाकर एक–एक बूंद दूध निकालकर वो बेचेगा। वहीं हाल धरती माता के प्रति हमारा है। ये धरती हमारी माता है, ये ही हमको अन्न देती है, ये ही हमको फल देती है। इसके बिना हम कुछ नहीं कर सकते। इसलिए हमारे यहां कोई मकान बनाते हैं, धरती खोदते हैं तो उसका भूमि पूजन किया जाता है। पहले कुल्हाड़ी चलाने से पूर्व, फर्सा चलाने से पूर्व हम उसकी पूजा करते हैं कि माता हमारा काम नहीं चल रहा है इसलिए हम तुझको कष्ट दे रहे हैं। तो इसलिए इस भूमि के प्रति, इस गौ के प्रति हमारी दृष्टि है। इसलिए हमारी जो सारी कृषि है वो गौ आधारित है। गौ को केन्द्र में बनाकर पहले बैलों से हम बाकी का काम लेते थे और हमारा जो सेन्द्रीय खाद है 'ऑर्गेनिक मेन्योर' वो भी उन्हीं से प्राप्त होता था। अभी पिछले साल में थोड़ा अध्ययन किया है, किसान संघ ने तो पाया है कि जो गऊ दूध नहीं देती, ऐसी सूखी गाय भी घाटे का सौदा नहीं है, वो इस समय गोबर से और मूत्र से इतना खाद उत्पन्न करती है कि वो किसी भी प्रकार से घाटे का सौदा नहीं है। वो मनुष्य की तरह नहीं है जैसे हम लोग हैं कि बूढ़े हो गये तो किसी काम के नहीं। प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी बड़े साफ बोलने वाले थे, सम्पूर्णानन्द जी से मिलने गये। गवर्नर थे राजस्थान के, कहा कि गौहत्या बन्द होनी चाहिए। अब तो आप शासन में आ गये हैं। तो उन्होंने कहा कि ब्रह्मचारी जी गौहत्या बन्द होनी चाहिए यह तो मैं भी मानता हूं पर बूढ़ी गौओं का क्या करोगे? तो उन्होंने कहा बूढ़ी गौओं की बात बाद में सोची जायेगी। इस देश में आप जैसे बूढ़ों का क्या करेंगे? जो खाते हैं, दवाई खाते हैं और कुछ नहीं कर पाते।

सोचने की दृष्टि जैसे घर में माता पिता के लिए सोचते हैं वो तो कुछ भी नहीं कर पाते कई बार। परन्तु गौ की कृतज्ञता की मूर्ति मानकर वो अधिक दिन जीती नहीं जब उसके दूध देने की क्षमता समाप्त हो जाती है तो अधिक दिन जीती नहीं परन्तु उस समय में भी लाभकारी है क्योंकि आजकल सबकी समझ में आ गया है कि जो रासायनिक खाद हैं, वे भूमि को खराब कर देती है। बहुत अच्छी फसल खींचने के प्रयत्न में भूमि बाद में उर्वरा नहीं रह जाती है और इस लिए अब सब ओर यह प्रयत्न चला है कि आर्गेनिक खाद से वही पौष्टिक है, वह बीमारियों को जन्म नहीं देता है जो आर्गेनिक खाद से उत्पन्न हुई है। तीन डालर में लेंगे चीज जो आर्गेनिक खाद से उत्पन्न नहीं हुई है उसे १ डालर में लेगें जो कि रासायनिक खाद से उत्पन्न हुई है। समन्वय वो करने लगे। गौ के दूध में कितनी पौष्टिकता है। दवाओं का कितना खर्चा बचता है। इस प्रकार के उगाये फल जिसमें पैस्टिसाइड नहीं हैं, जिसमें कैमिकल फर्टिलाइजर नहीं है खाने वाले व्यक्तियों के मैडिकल का कितना खर्चा बचता है तो ऐसी कई चीजों में बड़ा भारी परिवर्तन, ऐसा मूलभूत परिवर्तन हुआ है। आज चारों ओर पर्यावरण बिगड़ रहा है नदियों का पानी दूषित हो रहा है उनके अन्दर जो चीजें डालते हैं उनसे क्या घटना होती है सोमानिया में आपने सुना होगा कि साईनाइड पानी में मिक्स होकर चला गया। मछलियां मर गई, पानी के जानवर मर गये, पानी पीने वाले आदमी मर गये। ये सारी घटनाएं होती रहेंगी। हमनें कभी ऊँचे स्टैण्डर्ड की मांग नहीं की। वह हमारा लक्ष्य नहीं है। बहुत पैसा होना ये लक्ष्य नहीं है। आदमी की तो अपार आकांक्षाएं–इच्छाऐं रहती हैं। छोटी मोटर ली तो लगता है बड़ी मोटर होनी चाहिए, बड़ी मोटर आ गई तो एयर कंडीशन्ड होना चाहिए, और नहीं तो फिर एक के बाद दो मोटर की आवश्यकता है, तो इच्छायें बढ़ती जाती हैं। केवल भारतवर्ष में ही कि जहां पर हमारा किसान–किसान के साथ काम न करनेवाला मजदूर बहुत अल्प व्यवस्था में भी आराम के साथ सो सकता है। उसको सोने के लिए दवाईयों की आवश्यकता नहीं है। मन का सन्तोष है इसलिए किसान का कहना है उसको बहुत पैसा थोड़े ही चाहिए। हमको न सब्सिडी चाहिए न इलैक्ट्रिक मुफ्त में चाहिए। हमारी आप कीमत निकाल लो। यही कहता है किसान संघ, कि लागत हमारी निकाल लो। १०० रुपये पर १०५ तो हम को मिले तब तो इस काम में लगेंगे और यदि १०० पर ७५ रह गया। लोग जो आजकल हिसाब लगा रहे हैं कि पहले वो ६० था फिर ८०–८५, आजकल तो ८०

से नीचे उतर गया है तो कैसे किसान खेत पर रहेंगे परन्तु आज तो वो पेट काटकर भी लगा रहा है तो देश जो आज खाद्यान्न के लिए आत्म निर्भर है तो आत्मनिर्भरता खत्म हो जायेगी और अमेरिका से लेना पड़ेगा, रुस से लेना पड़े और जो देश खाने के विषय में आत्मनिर्भर नहीं है वो देश विदेशी षडयन्त्रों का शिकार होता है। आज मल्टीनेशनल कम्पनी बहुराष्ट्रीय कम्पनी है। वही खतरे की घंटी बजा रही है। सुनने वाले सुनें कि हमारे देश के खाद्य के बीजों के अनेक बातों के ऊपर वह अपना कंट्रोल करना चाहती है। यह हमारा संगठन है कि जिस संगठन के आधार पर हम किसी से मुकाबला कर सकते हैं, केवल सरकार के आधार पर नहीं। ठीक है सरकार अपने विचारों से कुछ समानता रखती होगी। हमारे विचार के कुछ लोग वहाँ गये होंगे। हमारे मित्र लोग होंगे पर सरकार में अकेले सामना करने की क्षमता नहीं है। उसकी सहायता करने वाला समाज चाहिए और समाज में भी अधिकांश लगभग ७० प्रतिशत किसान चाहिए। इसलिए जैसा आपने बताया कई क्षेत्रों में सेना की सहायता करने के लिए जनता को झुकना पड़ा तो आज से आगे के तीन–चार साल बड़े महत्व के हैं। उसके अन्दर विश्व के लोग अब राज्य तो सीधा नहीं कर सकते पर हमारे देश की सारी आर्थिक नीति अपने नियन्त्रण में लाना चाहते हैं। उस समय इस देश का यह हिन्दु समाज अन्य राष्ट्रीय समाज में कोई भेद नहीं करता। सब समान हैं। इस देश का जो मुसलमान है, वह भी ९८–९९ प्रतिशत हिन्दु पूर्वज ही है। राम, कृष्ण ही उसके पूर्वज हैं। इसलिए यहां आये हुए विदेशी एक मुट्ठी भर लोग रहे होंगे, सब मर–खप गये। वो सब इसी देश के हैं। यही उनकी भाषा है, यही उनकी संस्कृति है तो ऐसा ये जो हमारा समाज है, तो इसके विषय में कहा जाग्रत होना चाहिए। इसमें से भी जो ७० प्रतिशत आये वो किसान नहीं हैं। नेहरू जी के काफी प्रयत्न करने के बाद दोष तो उत्पन्न हो गये, वातावरण दूषित हो गये, नदी खराब हो गयीं परन्तु कोई और भी चारा ही नहीं है समाज के पास। अभी भी ७० प्रतिशत किसान गांव में रहता है और यह निश्चित है कि कठिनाईयां आती हैं। गांव में अच्छी सड़कें नहीं हैं, चिकित्सा की कठिनाई है, शिक्षा की कठिनाई है। परन्तु आज भी अधिक अच्छा भोजन मिलता है, अधिक अच्छी वायु मिलती है, अधिक अच्छा जल मिलता है, तो इसलिए देश में जिन्होंने चिन्तन किया, गांधीजी भी उनमें से एक हैं। हम उनकी इज्जत करते हैं। उन्होंने कहा था कि ग्राम केन्द्रित विकास होना चाहिए। नेहरू जी ने कहा (विदेश का अनुकरण करने की उनकी बड़ी प्रवृत्ति

थी), शहर केन्द्रित और फैक्ट्री केन्द्रित व इण्डस्ट्रीज केन्द्रित विकास होना चाहिए। इन ५० साल में हमने देख लिया कि इस विकास का क्या हाल है। जमुना का पानी कैसा है, गंगा का जल कैसा है, ये सारी चीजें हमारे हाथ में आ गयीं। कैसे भूमि खराब हो गई है। कैसे वायु प्रदूषित हो गई है और शहरों में हमें मास्क लगाने की जरूरत है। तो यह एक गलत दिशा है। ग्राम केन्द्रित खेती, उसको उपयोगी बनाना और यदि आदमी वहाँ से भागने की बात न सोचे तो बहुत दोषों से देश बच जायेगा। कैसे रहते हैं वो गांवों से जाकर शहर में। छोटी–मोटी नौकरी करते हैं, कैसा उनका जीवन है और कैसा मिलता है उनको पीने को जल। कहीं चारों ओर गन्दगी फैली है, यह कोई जीवन–जीवन नहीं है। उससे तो अच्छी अपने गांव में एक झोंपड़ी है, उसके पास शुद्ध पानी, शुद्ध हवा व शुद्ध भूमि है। परन्तु इसमें दिशा देने की आवश्यकता पड़ेगी। समझना पड़ेगा देश में कोई सरकार खेती नहीं चला सकती। सरकारी खेती भी कठिन है। व्यक्ति जितनी मेहनत करता है वो अपनत्व के कारण, क्योंकि भूमि के प्रति अपनत्व है। चौधरी चरण सिंह जी उ०प्र० के हमारे बड़े किसान नेता थे। जो कहा करते थे कि रूस में सरकारी फार्म पर कितनी उपज है, सहकारी पर कितनी उपज है और व्यक्तिगत पर कितनी उपज है। यह बढ़ती जाती है। इसलिए मैं तो इतना ही कहूंगा कि भारत के जो श्रेष्ठ आदर्श हैं, जिस पर हमने भारत की भूमि को माता माना है, गौ को माता माना है, जो भी हमको जोड़ने वाली वस्तु है, उसको माता माना है, उस पुरानी संस्कृति से प्रेरणा लेकर हमारे देश के बन्धु खड़े हों। आज हमारे विचार को जानने के लिए विश्व के लोग तैयार हैं परन्तु बात उसी की सुनी जाती है कि जिसके पास शक्ति हो, संगठन की शक्ति। किसान बन्धुओं को भी हम पूरे समाज में लाना चाहते हैं। पूरे हिन्दू समाज में लाना चाहते हैं। पीछे बड़े श्रेष्ठ सिद्धान्त लिये। परन्तु रावण से तो अन्त में राम को युद्ध करना ही पड़ा था। यह वह भूमि है, जिसमें सब प्रकार के प्रयत्न करने के बाद भगवान श्रीकृष्ण को आज्ञा देनी पड़ी कि पाण्डवों युद्ध करो। हर जगह गीता में कहा है कि उठो, लड़ो। तो शक्ति की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि ये विचारधारा विश्व में, प्रेम का सन्देश देने वाली सबकी चिन्ता करने वाली है। 'सर्वे भवन्तु सुखिन' की बात बोलने वाली यह विजयी हो। विश्व में भारत का नाम हो। हमारे वैज्ञानिक, हमारे किसान, हमारी सेना का कैसा नाम हुआ है? भारत में अभी, कारगिल में जो काम किया है, उसके कारण, ऐसे ही हमारे देश का सब क्षेत्रों में

नाम हो। हम एक प्रसिद्ध तीर्थ पर बैठे हुए हैं। इस तीर्थ में अहिंसा का, प्रेम का, मैत्री का सन्देश हमेशा निकला है, परन्तु उसके भी पीछे शक्ति चाहिए। वो सन्देश प्रेम का कोई नहीं मानता है। अगर हम पीछे शक्ति खड़ी न करें तो। कहा गया है–अग्रता चतुरा होएगा पृष्ठता शरारत हेनू। आगे चारों वेद रहेंगे, पीछे धनुष–बाण होगा। जैसे भी मानें, समझाने से मानें तो बहुत अच्छा तो 'इदं शास्त्रं, इदं ब्रह्म, शयादपि शरादपि'। ब्राह्मण को शक्ति है श्राप देने की। यानि जो उसके अन्दर तपस्या के कारण जो तेज आया है, वो ब्राह्मण है और क्षत्रिय में धनुष चलाकर उस दुष्ट को नष्ट करें, जिस भी पद्धति से हो, परन्तु वो जो श्रेष्ठ भारतीय चिन्तक हैं, समान बातें हैं। हमने तो अहिंसा, सत्य, अस्तेयम, ब्रह्मचर्य, हिंसा की बातों को कितना श्रेष्ठ बताया है, इसलिए सारे सद्‌गुण विद्यमान होने चाहियें इस देश में। विश्व को यही देश इन सद्‌गुणों को सिखा सकता है। एक शक्ति भी निर्माण होनी चाहिए, हम किसी के आगे हाथ नहीं फैलायेंगे। 'न दैन्यं पलायनं' यही अर्जुन का सन्देश था। हम उस दृष्टि से तैयार होकर अपने काम में लगे, मैं अपेक्षा करता हूं, भगवान से प्रार्थना करता हूं कि आपको सब कार्य में यश मिलेगा और भारत की तस्वीर बदलने वाले आप सभी सिद्ध होंगे।

❑

गौ-सरंक्षण ही भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार

-हुकुम चन्द साँवला

परम श्रद्धेय दत्तोपंत जी, परम श्रद्धेय कुंवर जी भाई जाधव, मंचासीन पदाधिकारीगण, विश्ववन्दनीय मातृशक्ति मेरे देशबन्धुओं धर्मबन्धुओं, पश्चिमी देशों की मान्यता है कि विश्व एक बाजार है और केवल मनुष्य को ही जीने का अधिकार है। भारतीय संस्कृति की ही मान्यता है विश्व एक परिवार है, सबको जीने का अधिकार है। पूर्ववर्ती सरकारों ने पश्चिम की इस मान्यता को स्वीकार कर लिया। सारे भारत को बाजार बना दिया। बाजार में जैसे वस्तु खरीदी और बेची जाती है, भारत में आज वैसे ही सब कुछ बिक रहा है। आदमी बिक रहा है, औरत बिक रही है, लड़का बिक रहा है, लड़की बिक रही है, पशु बिक रहा है, पक्षी बिक रहा है, विधायक बिक रहा है, सांसद बिक रहा है, इन सबके बीच आदमी का ईमान बिक रहा है। अगर आदमी का ईमान न बिका होता तो गौमाता का सौदा न किया होता। गांधी बिक रहा है, गांधी के सिद्धान्त बिक रहे हैं। 'सत्य, अहिंसा' यह जो नारा है, दीवारों पर लिखा जाता है, दीवालो पर पुत जाता है (वाह रे गाँधी खूब चली तेरे नाम की आँधी, जिन्दगी भर फिरा एक लंगोट में, आज बैठा है दस रुपये के नोट में)। दस रुपये में गांधी खरीदा और बेचा जा रहा है। गांधी के सिद्धान्तों की आज हत्या हो रही है। गांधी के शिष्य गांधी को पिटवा रहे हैं, रोज पोस्ट आफिस में गाँधी पर सील ठुकवा रहे हैं। आज हमारी मान्यतायें, आस्थायें मान बिन्दुओं का अपमान हो रहा है। देव निर्मित व्यवस्था थी कृषि व्यवस्था हमारी। जब मैं प्रातःकाल यहां पहुंचा तो मैंने भगवांन बलराम का चित्र देखा, हृदय आनन्दित हो गया। तब मुझे एक कथानक याद आया। भगवान शंकर ने पार्वती को बुलाकर कहा, पार्वती! इस धरती पर जो तुम्हारे पुत्र हैं मनुष्य, इनका भरण–पोषण, शरीर रक्षण कैसे होगा। इस पर जरा चिंतन करो। भगवान शंकर समाधि में चले गये। कुछ समय पश्चात् लौटे, लौटते ही प्रश्न किया, पार्वती! क्या कुछ चिंतन किया है कि धरती के मानवों का शरीर रक्षण पोषण कैसे होगा। पार्वती जी ने कहा, जी हाँ भगवान, किया है। कैसे करोगे भला? भगवन्! जब–जब आप समाधिस्थ होंगे, आपके जो प्रतीक चिन्ह हैं, आपकी जो वस्तुयें हैं, इनका उपयोग हम खेती करने के लिए करेंगे। 'कैसे'? भगवन्! जब आप समाधिस्थ होंगे तो आपका यह जो त्रिशूल है, इसको उल्टा कर इसमें रस्सी बांधकर आपके नंदी के गले में बांधकर हम बीज बोने के लिए धरती को जोतेंगे। जो अन्न पैदा होगा, बीज उगेगा, उस पर जब कीड़े बैठेंगे तो हम गौमूत्र का छिड़काव कर उसकी रक्षा

कर लिया करेंगे। भगवन्! अन्न अधिक मात्रा में पैदा हो, इसलिए गाय का गोबर, बैल का गोबर, जिसका खाद बनाकर हम खेतों में डाल दिया करेंगे। भगवन्! जब अन्न की सिंचाई करनी होगी, बीज व खेती की सिंचाई करनी होगी, आपके मस्तक पर स्थित गंगा के जल का उपयोग हम सिंचाई के लिये करेंगें जब पक्षी आवश्यकता से अधिक फसलों को बिगाड़ने लगेंगे तो भगवन्! आपके डमरू को बजाकर हम उन्हें उड़ा दिया करेंगे। आपके गले में स्थित नागराज सर्प खेती की रक्षा करेगा और शिव परिवार का वाहन अर्थात् गणपति का वाहन मूषक सर्प के रहने के लिए खेत में जगह बनायेगा और खेती को उर्वरा बनायेगा। कार्तिकेय का वाहन मयूर, बादलों व वर्षा के आने की सूचना अपने आवास से लगा दिया करेगा किन्तु भगवन विपरीत स्वभाव के इन तीनों प्राणियों में गठबन्धन नहीं होगा। अगर गठबन्धन हो गया तो खेती समाप्त हो जायेगी। जैसे गठबन्धन की सरकार अभी चल रही है और देश की संस्कृति पर आघात कर रही है, ऐसा गठबन्धन नहीं होगा। भगवन्! अन्न से बचा हुआ जो शेष खाद्यान्न होगा, उसको बीज के रूप में हम सुरक्षित रखेंगे। आप जो भस्म लगाते हैं, जो राख कण्डे की मिलती है, उस गाय के गोबर के कण्डे को सुखाकर उसकी राख में हम इस बीज को सुरक्षित रखा करेंगे। इस प्रकार हम अन्न पैदा करके मानव जाति के शरीर का रक्षण व पोषण करेंगे। भगवान शंकर एवं पार्वती ने ये व्यवस्था निर्माण करायी। देव रणनीति की इस व्यवस्था से प्रकृति से प्रकृति का रक्षण होता था। जब से हमने इस देव निर्मित व्यवस्था को तिलांजलि दी, रासायनिक खाद लाये, ट्रैक्टर लाये, पेस्टिसाइड लाये तब से यज्ञ रूपी कृषि और ऋषिरूपी यह किसान अपमानित हो रहा है। आज मेरे बन्धुओं, खेती का आधार जो गौवंश है, वो कितनी बड़ी संख्या में काटा जाता है। इसे समझ लेना नितान्त आवश्यक है। चार अप्रैल, १९९४ The Times of India, New Delhi लिखता है, कि भारत में तेरह सौ लाख पशुओं की हत्या प्रतिवर्ष होती है। तीन हजार लाख पक्षी प्रतिवर्ष काटे जाते हैं अर्थात् एक दिन में ६ लाख ७९० पक्षी काटे जा रहे हैं। एक घंटे का विचार करें तो ३४२४६ पक्षी काटे जा रहे हैं। एक मिनट का विचार करें तो ५७० पक्षियों की हत्या १ मिनट में हो रही है। अगर पशुओं का विचार करें तो तीन लाख छप्पन हजार एक सौ चौंसठ पशु एक दिन में काटे जाते है। एक घंटे में १४८४० पशु काटे जाते हैं। एक मिनट में २४७ पशुओं की हत्या होती है। केवल गौवंश का विचार करें तो पचास हजार गौवंश एक दिन में काटा जाता है। एक घंटे में २१०० गौवंश काटा जाता है। एक मिनट में ३५० गाय–बैलों की हत्या हो रही है। अगर यही क्रम जारी रहा तो जीव–जन्तु कल्याण, जिसके अध्यक्ष अभी आने वाले हैं, उनकी घोषणा के अनुसार सन् २०१० के पश्चात्

महाधिवेशन की कुछ अन्य झलकियाँ

अन्न के हम भंडार भरेंगे–लेकिन कीमत पूरी लेंगे

महाधिवेशन की कुछ अन्य झलकियाँ

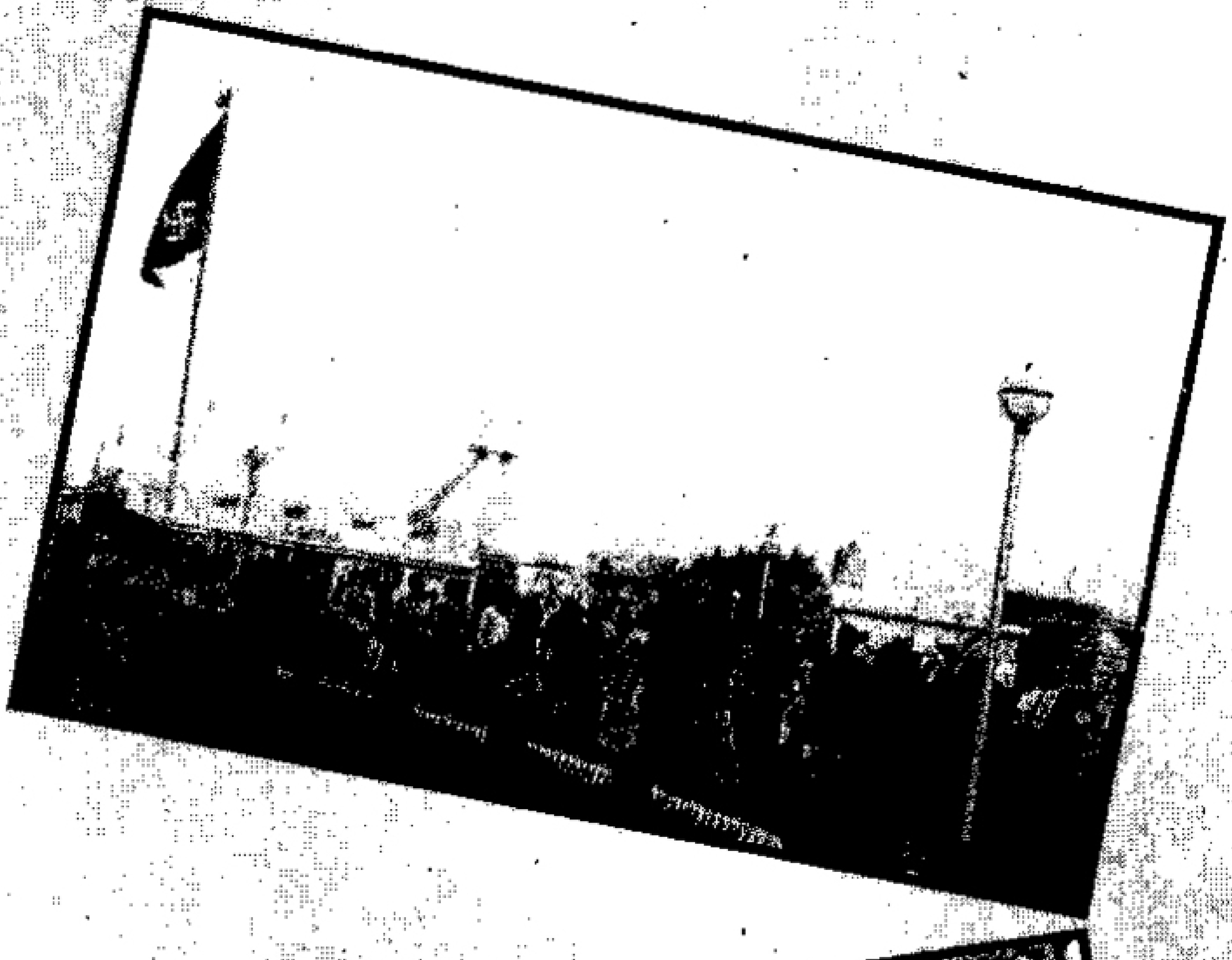

भारत में से पशु व पक्षियों की कई जातियां विलुप्त हो जायेंगी। फिर दिखायी नहीं देंगें। अपनी कृषि का आधार बैल और गाय केवल अजायबघर में देखने को मिलेगा, धरती पर नहीं रहेगा। भारतीय गायों की ६६ नस्ल अब तक समाप्त हो चुकी हैं या समाप्ति के कगार पर हैं। गाय पर्यावरण है, गाय विज्ञान है, गाय आयुर्वेद है, गाय अर्थशास्त्र है, गाय धर्मशास्त्र है। हम सभी लोग गांव से आये हैं। हमारे यहां प्रदूषण नहीं है, सांस्कृतिक प्रदूषण तो जरूर है पर हमारे यहां प्रदूषण की कोई समस्या नहीं है गांव में। इसलिए इसकी मैं चर्चा नहीं करता हूं। परन्तु पशु रात दिन जो कट रहा है, इसका कैसा दुष्परिणाम हो रहा है, इसे समझ लेना चाहिए। पशु कटा, ईंधन कम हो गया, ईंधन कम हो गया जंगल काटे गये, जंगल कटे, वर्षा कम हो गई।

वर्षा कम हो गई तो भूमि का जलस्तर गहरा चला गया। भूमि का जलस्तर गहरा चला गया, खेती की उपज कम हो गई, खेती की उपज कम हो गई, देश में अराजकता और अकाल आ गया। लोग मरने लगे। सरकार को कहा लोग मर रहे हैं, सरकार ने कहा कैमिकल फर्टिलाइजर लाते हैं, रासायनिक खाद आया, फसल उगी, खाद डाला, बहुत बड़ा टमाटर पैदा हुआ लाल–सुर्ख। खाया तो भूसे जैसा स्वाद आया। आज से दस वर्ष पहले जो टमाटर का स्वाद था, वह आज है क्या? आज से दस वर्ष पहले जो गेहूं थे, वैसे हैं क्या। जैसा खायेंगे अन्न, वैसा रहेगा मन, जैसा पियेंगे पानी, वैसी रहेगी वाणी, जैसा खायेंगे धान, वैसी होगी शान, आज उसका परिणाम हमने भोगा, मनुष्य में भी स्वाद नहीं बचा है। मैं जब किसी के घर जाता हूं, मुझसे कहते हैं आइये–आइये भाई साहब, बहुत दिन हो गये, आपको देखे बिना आंखें तरस गयीं। बैठता हूं, पानी आता है, पीता हूं, इतनें में श्रीमती जी अन्दर से एक बच्चे को भेजती हैं, वह पूछता है, अंकल जी कब जाओगे? क्यों? क्या हो गया। अभी तो कह रहे थे, आंखें तरस गयीं। श्रीमती जी ज्यादा तेज हैं, वे सोचती हैं, दो–चार दिन तो नहीं टिके रहेंगे, झोला लेकर आया है, टिक जाये तो टिक जाये।

घर–घर गाय, ग्राम–ग्राम गौशाला ये है भारत की निरोगशाला। भारत का अर्थतंत्र है भारत की गाय। १९८७ में भारत सरकार के पशु धन विभाग के अनुसार भारत में १६ करोड़ ४७ लाख गौवंश था, अर्थात् २० करोड़। २० करोड़ गौवंश का गोबर होगा २५ लाख टन। एक क्यूबिक मीटर बायोगैस निर्माण के लिए २५ किलो० गोबर लगता है अर्थात् २५ लाख टन गोबर से बायो गैस निर्माण होगी १० करोड़ क्यूबिक मीटर बायोगैस। एक व्यक्ति भोजन बनाता है तो उसमें आधा क्यूबिक मीटर गैस लगती है, अर्थात् २० करोड़ लोगों को भोजन बनाने की ऊर्जा हमारा गौवंश इन किसानों के माध्यम से उपलब्ध करा सकता है। इसको अगर पैसे में

आंकेंगे, सारा पैसा लगाने के बाद खर्चा निकालकर लाभ २०० करोड़ रुपये होगा। इस बायोगैस से जो कैलोरी निकलेगी, मेरे काम्पोस्ट पिट के माध्यम से अगर आपने खाद बनाया तो यह होगा तीन सौ करोड़ रुपये का। भारत में आठ करोड़ बैल हैं और एक बैल ५ हॉर्सपॉवर की ऊर्जा रखता है। ४० हजार मेगावाट ऊर्जा हमें इससे प्राप्त होती है। अर्थात् ५०० करोड़ रुपये की। ६ करोड़ ८० लाख टन दूध होता है। १२• रुपये लीटर के भाव से आंकें तो ६०० करोड़ रुपये का दूध होता है। सारा खर्च निकालने के बाद १६०० करोड़ रुपया हमें गौवंश से प्राप्त होता है। भारत सरकार माँस निर्यात करती है। एक कत्लखाना देवनार, अलकबीर, पंजाब मीट्स लिमिटेड, कलकत्ता का टेंगड़ा कत्लखाना, ये नाम सुने होंगे। ये सब यांत्रिक कत्लखाने हैं जहां मशीनों से पशुओं को काटा जाता है। मैं ढ़ाई घंटे तक देवनार के कत्लखाने में कसाई के वेश में अन्दर रहा। मैंने अपनी आँखों से वहां का दृश्य देखा। पशुओं को ७ दिन तक भूखा रखा जाता है, घास नहीं खिलाते, पानी नहीं पिलाते। दो–तीन दिन में गाय, बैल, भैंस बेहोश होकर नीचे गिर जाते हैं। चौथे पाँचवे या छठे दिन कसाई आता है, टांग पकड़ता है और घसीटते हुए ले जाता है। भूखे प्यासे पशुओं को ले जाने के बाद दो कसाई बाहर आते हैं, उनके हाथ में बेंत होती है। बेतों से उस बेहोश पशु की पिटाई शुरू होती है। इतना मारते हैं कि सारा चमड़ा फूल जाता है। २०० डिग्री सेंटीग्रेड की भाप ५ मिनट तक उस पर डाली जाती है। फिर एक पुली पास आती है, उसके पीछे पेट को जकड़ती है व क्रेन उस पुली के माध्यम से पशु को उलटा लटका देती है। एक टांग पर पशु को उल्टा लटका दिया जाता है। उसी समय एक मशीन पास में आती है जो खच्च से उसकी गर्दन की नसें (जैबुलरवीन गल्नस) काट देती है। खून की नदियां बह निकलती हैं। छोटे मध्यम श्रेणी के कत्लखाने से दस हजार लीटर खून प्रतिदिन निकलता है। पशु अभी मरा नहीं है, केवल उसकी गर्दन कटी है, खून बह रहा है। छटपटाता है। दो कसाई लिफ्ट में बैठकर आते हैं, चमड़ी में दो कट लगाते हैं क्लिप लगाते हैं और लिफ्ट नीचे आने लगती है। छुरियां साथ चलती हैं। जीवित पशु का चमड़ा उतार लिया जाता है। एक झटका खाता है, पशु मर जाता है। अगर पशु मर गया तो चमड़ा मोटा हो जायेगा और चमड़ा मोटा हो गया तो कीमत कम हो जायेगी। इसलिए जिन्दा पशु का ही चमड़ा उतारा जाता है (जो सताते हैं औरों को सताये वे भी जायेंगे और जो बचाते हैं प्राण गैरों के, बचाये वे ही जायेंगे)।

देवनार कत्लखाना रात दिन पशु काट रहा है। मैंने निवेदन किया कि गाय पर्यावरण है, वह विज्ञान है, वह अर्थशास्त्र है, गाय आयुर्वेद है, गाय कृषिशास्त्र है।

गाय धर्मशास्त्र है, गाय समाजशास्त्र है। समय का संकेत हो रहा है। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि गाय धर्मशास्त्र है और किसान संघ में आकर धर्म पर चर्चा करने से मैं कम से कम साम्प्रदायिक नहीं माना जाऊंगा, ये मेरा विश्वास है। घर में गाय पालेंगे, भगवान कृष्ण का, भगवान शंकर का आशीर्वाद प्राप्त होगा। गऊपुराण में उल्लेख आया कि गाय की अगर हमने सेवा की तो वैतरिणी नदी के किनारे पर हमें गाय मिलेगी और गाय की पूंछ पकड़ेंगे तो गाय हमें वह नदी पार करा देगी। आज का नौजवान कहता है, किसने देखी वैतरिणी, किसने देखा स्वर्ग। प्रैक्टीकल बात करो। हमने बुलाया, कहा एक गाय को तालाब के किनारे लाओ और गाय को पानी में उतारो और उतरने के पश्चात् उसकी पूंछ पकड़ लो तैराते हुए पानी के बाहर निकाल ले जायेगी। फिर भैंस लाओ, उसको पानी में उतारो, उसकी पूंछ पकड़ो वह बैठ जायेगी। क्यों होता है ऐसा? गाय की पूंछ पकड़ते हैं, गाय हमारी माँ है। "मृर्त्योमामृतं गमय" माँ मुझे मृत्यु से अमृत्व की ओर ले चलो। गाय हमारी माँ है। गाय की पूंछ पकड़ेंगे तो तैराते हुए ले जायेगी। गाय का पुत्र बैल नंदी भगवान शंकर का वाहन है। मृत्युंजयी भगवान शंकर का वाहन है। मृत्यु पर विजय प्राप्त करा देगा और भैंस का पुत्र भैंसा किसका वाहन है, यमराज का। पूंछ पकड़ोगे तो कहां ले जायेगा, यमराज के पास ले जायेगा। शनि का वाहन भी भैंसा है। जबसे हमने गाय काटनी शुरू की शनि का प्रभाव भारत में लग गया है। घर में गाय पालेंगे। भगवान कृष्ण आयेंगे, आशीर्वाद देंगे, भगवान शंकर आयेंगे, आशीर्वाद देंगे। भैंस पालेंगे यमराज आयेंगे। आप उसकी सेवा कर रहे हैं जो उनका वाहन है। आपको भी साथ ले जायेंगे। घर में गाय का दूध पिलाइये। घर में मातायें बच्चे को गाय का दूध पिलायेंगी, बच्चा खेल के मैदान में विजयी होगा, पढ़ाई में विजयी होगा, प्रथम श्रेणी में आयेगा। देश भक्त, मातृ–पितृ भक्त बालक पैदा होगा। हम सब गाय का दूध पियें गाय बच जायेगी पर गाय का दूध बेचते हैं व भैंस का दूध बच्चों को पिलाते हैं। भैंस के दूध के प्रभाव से बच्चा वैसा ही हो रहा है। मेरे मित्रों, किसान बन्धुओं से मैं आग्रह करता हूं किसी गांव में गौशाला है, आप अपने यहां से घास, चोकर, पिण्डियां, भूसा गौशालाओं को एकत्र कर उपलब्ध कराइये। मैं किसान संघ से यही प्रार्थना करने आया हूं एक निवेदन करने आया हूं। अगर आपके पास नोट हो तो नोट निकालें, दस रुपये का पुराना नोट, नये नोट पर तो चिन्ह छोटा हो गया, सभी पर एक राष्ट्रीय चिन्ह मुद्रित होता है, ये तीन मुंह का शेर भारत की अहिंसक संस्कृति का प्रतीक है। इसके ठीक नीचे एक चक्र बना हुआ है, धर्म चक्र, जो नीति, न्याय व प्रगति का प्रतीक है। इसके आगे एक अश्व बना हुआ है ये

विश्वसनीयता का प्रतीक है, ये गति का प्रतीक है। इसके पीछे बैल बना है जो भारतीय कृषि का प्रतीक है। अगर कोई राष्ट्रीय झण्डे का अपमान करता है तो उसके खिलाफ मुकदमा चला सकता है। कोई राष्ट्रीय गीत का अपमान करता है, उसके साथ भी मुकदमा चल सकता है। सर्वोच्च न्यायालय ने यह निर्णय दिया उनकी दृष्टि से शायद ये बिन्दु ओझल हो गया। सर्वोच्च न्यायालय ने निर्णय दिया कि १४ वर्ष के ऊपर का बैल या सांड काटा जा सकता है। राष्ट्रीय चिन्ह पर अंकित जीव की हत्या करना राष्ट्रचिन्ह का अपमान है। मैं केन्द्र सरकार से निवेदन करता हूं कि या तो वह राष्ट्रीय चिन्ह बदल डालें अन्यथा गौवंश हत्या के लिए केन्द्रीय निषेध कानून बनायें। गाय बचेगी, देश बचेगा। गाय नहीं कटने देंगे और देश नहीं बंटने देंगे। एक प्रसंग सुनाता हूँ,

"जंगल में आग लग गई, सारा जंगल भर–भर करके जलने लगा। पशु–पक्षी मरने लगे। बड़े–बड़े पशु, बड़े–बड़े पक्षी चट्टानों पर आकर खड़े हो गये। अग्नि को सामने देखकर पशु भगवान का नाम स्मरण करने लगे कि अग्नि पास आयेगी और हमें जलाकर मृत्यु प्रदान कर देगी। उसी समय एक घटना घटी, एक चिड़िया आई, उसकी चोंच में पानी था, उसने आग पर पानी डाला। चिड़िया फिर तालाब पर गई। चिड़िया ने पुनः यह क्रम दोहराया। पशुओं ने अट्टाहास किया, चिड़ियों ने उपहास किया कि बावली चिड़िया! सारे जंगल में आग लगी हो तो तेरी चोंच के पानी से आग बुझ जायेगी? चिड़िया ने कहा, आग बुझ सकती हो, या न बुझ सकती हो मैं नहीं जानती, परन्तु इसे बुझाने के लिए मैं अपने कर्तव्य का निर्वाह कर रही हूं। यह बात हाथियों ने सुनीं, बड़े पशु–पक्षियों ने सुनी कि ये चिड़ियां जंगल की आग बुझाने के लिए अपने कर्तव्य का पालन कर रही है तो सबको कर्तव्य बोध हुआ। सब भागकर तालाब पर गये। अपने–अपने साथ पानी लाये। हाथी भी सूंड में पानी लाये और आग बुझानी प्रारम्भ की। धीरे–धीरे जंगल की आग बुझ गई। ऋषि चाणक्य ने लिखा है—हमें भय नहीं है दुर्जनों की दुष्टता से, हमें भय है सज्जनों की निष्क्रियता से। मैं आपकी सक्रियता व कर्तव्य पारायणता के लिए भगवान से प्रार्थना करता हूं। भगवान बलराम हम सबको कृषि प्रदान करें, फिर से भारतीय पद्धति का निर्माण हो, गौवंश की रक्षा हो।

❑

ग्रामोन्नति का मूल–ग्राम विकास

-सुरेन्द्र सिंह चौहान

आज मैं अपनी आँखों के सामने इस भारतवर्ष का ये जो दृश्य देख रहा हूं, विविध वेष–भूषा, विविध भाषा, खानपान की पद्धति, पूजा पद्धति, कितनी सारी विविधताओं के होते हुए भारतमाता का यह स्वरूप आँखों के लिए अत्यन्त सुखदाई दिखाई दे रहा है और वास्तव में हम इस भारतमाता के पुत्र हैं। इस माता व पुत्र के भाव ने हम सबको जोड़ा है। हम सब बन्धु हैं और यही हमारा राष्ट्रीय जीवन है। सरकारें आयेंगी–जायेंगी, उनमें परिवर्तन होगा, परन्तु यह जो राष्ट्र है, जिसका मैं अपनी आँखों के सामने स्वरूप देख रहा हूं, चिरंतन है, अपार है। इसका कभी नाश नहीं होगा। हजारों वर्षों से यह देश दुनिया का आदर्श देश रहा है और इसी परम्परा का निर्वाह आगे तक चलता रहेगा। भारत १९४७ में स्वतन्त्र हुआ, जिन राजनेताओं के हाथ में देश की सत्ता आई, उनके सामने भारत का चित्र कैसा होगा, कैसा होना चाहिए, यह स्पष्ट नहीं था। पं० जवाहर लाल नेहरू जी प्रधानमंत्री बने, उनका मस्तिष्क पाश्चात्य सभ्यता के संस्कारों से रंगा हुआ था। उन्होंने स्वतन्त्र भारत को रूस के मॉडल पर बनाने का प्रयत्न किया और यही कारण है कि जवाहर लाल जी ने इस देश में बड़े–बड़े उद्योग खड़े किये और अपना सारे का सारा ध्यान शहरों पर केन्द्रित किया। शहरों को ही उन्होंने विकसित करने का संकल्प लिया। भारत की आत्मा को वे शायद न समझ सके। परन्तु गांधी जी ने इस देश की आत्मा को समझा था। गांधी जी ने समझा था कि देश में रहने वाला ७५ प्रतिशत समाज ग्रामों में रहता है। अतः हम चाहते हैं कि भारत में रामराज्य की स्थापना होनी चाहिए। परन्तु गांधी जी का रामराज्य कहाँ गया? हंसी में उड़ा दिया गया। और आज देश का जो एक स्वरूप हमारे सामने दिखाई देता है कि आज ५३ वर्षों में भारत के ग्रामों का जीवन जैसा पहले था, वैसा ही आज है। इसकी तुलना देता हूँ–एक घटी होती है, घड़ी का कांटा होता है। एक छोटा कांटा व एक बड़ा कांटा है और ५३ वर्षों से ये घड़ी नहीं चल रही है। विकास के नाम पर किये गये कार्य सम्पन्न नहीं हुए। और सूक्ष्मता से हमने यह घड़ी खोलकर देखा कि उसमें बैटरी का सैल ही नहीं है, केवल घड़ी है। भारत का विकास नहीं हो सका। मूल कारण है इस देश की वास्तविक सांस्कृतिक परम्परा के आधार पर ये देश विशिष्ट होगा। इस देश में

जो भी कार्य कर रहा होगा, देश की संस्कृति और आध्यात्म वह हमारा प्रेरणा का स्रोत होगा। उस प्रेरणा के स्रोत को छोड़कर जो कुछ भी किया जायेगा, वह निष्फल होगा। भारत–भारत ही रहेगा, भारत रशिया नहीं बनेगा, भारत इंग्लैण्ड नहीं बनेगा। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि इंग्लैण्ड बनने का प्रयत्न हमें नहीं करना है, रशिया बनने का प्रयत्न हमें नहीं करना है। इस भारत की आत्मा की पहचान करो और इस पहचान के आधार पर इस देश की सारी योजनायें बननी चाहियें। क्या विकास है? ग्राम के विकास का हमारा दृश्य क्या है? जहां हम यह कहते हैं हमारा ग्राम विकसित हो गया, सामान्यतया हमारा ध्यान उन बातों पर जाता है। ग्राम में मार्ग बन गये, भवन बन गये, विद्युत की आपूर्ति हो गई, जल मिलने लगा, विद्यालय बन गया। क्या यही सब कुछ ग्राम विकास है? परन्तु मैं इसे ग्राम विकास नहीं मानता। पं० दीनदयाल जी के जीवन का छोटा सा प्रसंग आपको बताता हूं–किसी एक बैठक के लिए दीनदयाल जी गये थे। रेल से उतरे। रात्रि का समय था। वाहन न उपलब्ध होने के कारण यात्रियों के साथ ही पैदल चल पड़े। मार्ग में प्यास लगती है, पानी कहां प्राप्त होगा? सामने देखा एक झोंपड़ी है। झोंपड़ी के सामने एक खाट बिछी हुई है, उस खाट पर जो सो रहा है, उसकी अत्यन्त दरिद्र अवस्था दिखाई दे रही है और सम्भवतः इसकी पत्नी होगी जो नीचे सो रही है। बिना कुछ बिछाये हुए, उसका बालक उसके साथ में है। दीनदयाल जी ने उनसे जाकर कहा–भईया हम बाहर से आये हैं। हमको पानी पीने के लिए चाहिए, रस्सी–बाल्टी दे दो। उसने कहा–हम रस्सी बाल्टी क्यों देंगे? हम पानी खींचकर आपको पिलायेंगे। मेरे हाथ का पानी तो अच्छे–अच्छे पंडित पीते हैं। दीनदयाल जी ने कहा–अच्छा तो तुम ही पिला दो। पानी निकाल लिया। जैसे ही दीनदयाल जी को बाल्टी से पानी पिलाने के लिए उसने पानी निकाला, उसकी पत्नी ने रोका–भईया थोड़ा रुको। दीनदयाल जी ने कहा–अरे, क्या बात है। वो अन्दर गई और थोड़ा सा दोने में गुड़ लेकर आई और कहती है–पहले गुड़ खाओ, फिर पानी पीना। दीनदयाल जी की आंखों में पानी आ गया। बाह्य दरिद्रता देखने पर भी इस महिला के अन्दर इतना भाव है कि अतिथि देवो भव। पानी पी चुकने के बाद दीनदयाल जी ने सोचा, इसके बच्चे के लिए पांच रुपये का नोट दे दूं। उन्होंने बुलाया, बहिन ये पांच रुपये रख लो। वह पीछे हट गई। वह बोली–यह पाप मुझसे नहीं होगा। दीनदयाल जी रो पड़े। वास्तविक भारतीय जीवन यही है। ये बाह्य दरिद्रता के कारण भारत देश गरीब नहीं

है। परन्तु इस गरीब दिखने वाले देश के अन्दर जो सांस्कृतिक मूल्य है, वे आज भी विद्यमान है। आज भी ये "सत्यंवद धर्मंचर" गांवों में देखने को मिलता है। "अतिथि देवोभव, मातृ देवोभव..." ये सारा का सारा दृश्य देखना है तो हमारी टूटी–फूटी झोंपड़ियों में गांव में जाकर देखो। कैसा आनन्दमय जीवन है और वास्तव में यही भारत की सांस्कृतिक परम्पराओं को फिर से पुनर्जीवित करना है। गांव में एक ऐसा व्यक्ति होता था जिसकी सारे लोग बात मानते थे। गांव में सुख था, शान्ति थी, स्वास्थ्य के लिए हमने इसको आध्यात्म से जोड़ना चाहा। जलाशय की शुद्धता रखने के लिए कि जल साफ रहना चाहिए हमने कहा जल देवता है। वन की लकड़ी नहीं काटना, वन देवता है। अग्नि का व्यर्थ उपयोग नहीं करना। सम्पूर्ण जीवन को अपने आध्यात्म के अन्तर्गत बनाया और इसी आध्यात्मिकता का विकास करना यह हमारा सांस्कृतिक आधार है। इसलिए हमें पुनर्रचना के रूप में ग्रामों को विकसित करना पड़ेगा। ग्राम एक परिवार है। हम सम्पूर्ण रूप से एक–दूसरे पर आश्रित हैं। परस्पर पूरकता का भाव हमारे गांव में है। गांव की वस्तुऐं गांव में रुपये उघाती हैं। एक गांव सम्पूर्ण रूप से आर्थिक रूप से, परिपूर्ण था। गांव का कपड़ा, गांव का तेल, गांव का भोजन, गांव की शाक–सब्जी, गांव के लकड़ी के औजार, लोहे के औजार हमारे गांव में बनते थे। इस प्रकार का सब प्रकार से एक स्वावलम्बी गांव, संस्कारित गांव, शिक्षा से युक्त गांव, क्षुधामुक्त गांव, ऐसे ग्राम का जीवन हमारा आदर्श है पर इसी आदर्श जीवन को फिर से स्थापित करने के लिए हमने कहा, सम्पूर्ण देश में प्रत्येक जिले में एक गांव खड़ा करना है और उसके लिए हम सारे के सारे लोग प्रयत्नशील हैं। भारतीय किसान संघ के कार्यकर्ता इस प्रकार के गांव का निर्माण कर सकते हैं। ये मेरा बौद्धिक नहीं है, मैं ये चर्चा करने के लिए आपके सामने खड़ा हूं। समयाभाव है परन्तु कुछ ऐसा हमने मिलकर प्रयत्न किया है उसका थोड़ा सा वर्णन आपके सामने रखूंगा। हमारा मध्य प्रदेश में एक छोटा सा गांव है, ३५०० जनसंख्या का। नरसिंहपुर जिला है। उस गांव में पिछले ५३ वर्ष से संघ की शाखा लगती है। प्रत्येक घर में एक–एक तो स्वयंसेवक है ही। सबने मिलकर सोचा गांव कैसा होना चाहिए, गांव अच्छा होना चाहिए, संस्कारित होना चाहिए क्योंकि इसी पर आधारित हमारा जीवन है। गांव के लोगों ने बैठकर विकास की बात की। हमारा विश्वास है कि ग्राम का विकास हमारी सरकार नहीं कर सकती। गांव की संरचना है। सरकार केवल आपको मकान दे सकती है, भौतिक सुविधायें दे सकती है परन्तु गांव के

अन्दर जो पारस्परिक सद्भावना का जो वातावरण है, परस्पर जो संवेदनशीलता का भाव है, संस्कार का भाव है ये सरकार के बस की बात नहीं है। गांव के लोगों को मिलकर ये सारे के सारे गुण पैदा करने पड़ेंगे। हम लोगों ने कहा, कृषि का विकास करो, कृषि हमारे जीवन का आधार है। कृषि ठीक होगी, किसान सबकुछ सुनने के लिए तैयार हो जायेगा। सबने बैठकर तय किया, सिंचाई की आवश्यकता है। सबने निश्चय किया और वहां पर पहले एक फसल होती थी, वहां पर दो–दो, तीन–तीन फसलें होती हैं। पहले समय में एक एकड़ में दो हजार कुंतल कुल पैदा होता था, आज वहां पर पचास हजार–साठ हजार एक एकड़ में पैदा करने वाले किसान हैं, क्योंकि सबने मिलकर तय किया है। तो सिर्फ ये बात आती है उद्योग। हमको बताया जाता है कि भारत कृषि प्रधान देश है। मैं कहता हूं कि भारत उद्योग प्रधान देश है। कृषि प्रधान तो है ही साथ ही हमारे प्रत्येक घर में छोटे–छोटे उद्योग हुआ करते थे। लकड़ी का उद्योग, कपड़े का उद्योग, साबुन बनाने का उद्योग, तेल का उद्योग। हमने इनको अपनी परिभाषा से निकाल लिया क्योंकि बड़े उद्योग का दृश्य हमारे सामने है। वास्तव में इन्हीं उद्योगों के कारण एक पुस्तक लिखी हुई है, उसका नाम है "ब्यूटीफुल ट्री"। उसमें लिखा है कि भारत सब प्रकार से सम्पन्न देश था और इस सम्पन्नता का आधार वहां के कुटीर उद्योग थे। ऐसा एक उद्योग प्रधान देश भारत है। और भारत की एकात्मता और ग्राम की एकात्मता और ग्राम के विकास का आधार हमने मन्दिर को माना था, ऐसा कौन सा गांव है, जहां कोई मन्दिर नहीं होगा। प्रत्येक गांव में एक मन्दिर होता था और ग्राम के विषय में चर्चा करने का यदि सर्वोत्कृष्ट स्थान कुछ है तो वह मन्दिर है। मन्दिर आधारित ग्राम विकास मन्दिरों के साथ–साथ एक पाठशाला होती थी, विद्यालय होता था और जिस विद्यालय का आधार बालकों को संस्कारित करने का होता था। जिसे हमने कहा विद्यालय के आधार पर ग्राम का विकास। गौमाता की सेवा के सम्बन्ध में अधिक नहीं कहूंगा। गाय के बिना ग्राम का जीवन नहीं है। गाय के बिना किसान का जीवन नहीं है। गाय के बिना ये देश भारत नहीं है। गाय तो इस देश का आधार है, गांव का आधार है और जिस गोबर को हम जलाते हैं, हमने अपने ग्राम में एक प्रयोग किया। हमने कहा, गोबर इस ग्राम में नहीं जलेगा। मेरे गांव में लगभग ४०० घर हैं, कैसे उसका उपयोग करना। गाय का उपयोग उसके दूध के मूल्य पर आंका जाता है। मैंने कहा कि ये विचार भ्रामक है। गाय दूध नहीं देने वाली भी भारतीय

जीवन को समुन्नत बना सकती है। एक छोटे से गांव में हमने ८६ बायोगैस संयन्त्र बनाये हैं और सभी चलते हैं। अभी देश के अनेक प्रान्तों में मेरा प्रवास हुआ। लोगों ने कहा कि वहां के बायोगैस संयंत्र नहीं चलते हैं। मैंने कहा, चलाने वाला चाहिये, चलेंगे। गौमाता की कृपा से सारे के सारे घरों में चाहे वह ब्राह्मण है, क्षत्रिय है, चर्मकार है, बढ़ई है, लुहार है, कुम्हार है, धोबी है, सबके घरों में बायोगैस संयंत्र हैं। मेरे घर में स्वयं आठ बायोगैस संयंत्र लगे हैं और बायोगैस संयंत्र गैस के लिए नहीं हैं, किसान के लिए उत्तम प्रकार का कम्पोस्ट है, जिसका निर्माण घर–घर में होता है। ये हमारी छोटी सी इन्डस्ट्री है। बायोगैस संयंत्रों के कारण पेड़ नहीं कटते। पेड़ क्यों कटेंगे लकड़ी की आवश्यकता नहीं है क्योंकि इनसे घरों में लकड़ी नहीं जलती, धूम्ररहित घर है। माताओं का स्वास्थ्य अच्छा है। सब कुछ अच्छा है। गौमाता की सेवा होती है और जिसके घर में गाय नहीं है, वो सड़क पर मिलने वाला गोबर एकत्र करता है। एक गोबर गैस के द्वारा उस ग्राम में क्रान्ति लाने का विचार हमने रखा है। हमारा संकल्प है हम १०१ गोबर गैस बनायेंगे। हर चार घर पर एक गैस होनी चाहिए। हमारे गांव का जो शिल्पी है, उसकी मांग बाहर होने लगी है। दूसरे प्रान्तों में अभी ड़ेढ़ महीना हो गया। अकोला की गौशाला वाले दो कारीगरों को ले गये हैं। वे बोलते हैं जितना हमको बनाना है उतना बना देने दो वे कारीगरों को वापस भेजते नहीं है। गांव में छोटे–छोटे उद्योग खड़े हो रहे हैं। गोबर गैस के कारण प्लम्बर हमारे गांव का है, ईंट बनाने वाला हमारे गांव का है। सबकुछ गांव का है। सोचना पड़ेगा गांव का धन किन–किन मार्गों से बाहर जाता है। उसको रोकना होगा। गांव का दर्जी उसको उद्योग मिलना चाहिए। गांव का नाई उसको उद्योग मिलना चाहिए। गांव की किराने की दुकान पर हमारा खर्चा होगा। उससे हमारा लेन–देन चलना चाहिए। गांव की प्रत्येक वस्तु को यदि हमने धैर्य से विचार किया तो गांव का पानी गांव में, गांव का पैसा गांव में और जो पढ़ा–लिखा है वो गांव में ही रहकर के ही गांव का विचार करेगा। गांव एक स्वर्ग बन जायेगा। शौचालय की दृष्टि से जब हम ग्राम के बाहर देखते हैं, महिलायें, बालिकायें, पुरुष शौच के लिए मार्गों पर जाते हैं। हमने मिलकर तय किया कि इस प्रकार की अस्वच्छ बातें हमारे गांव में नहीं होंगी। हमने प्रयत्न करके गांव में २३०

है। आप कहते हैं वृक्षारोपण, कोई पौधारोपण नहीं करता। गांव में हमने पौधों की सुरक्षा की व्यवस्था की है। छोटा पौधा लगाने पर वह खेत पर मर जाता है। हर साल उसी कृषि स्थान पर पौधे लगाये जाते हैं। एक सीमेन्ट की बोरी ली, उसमें एक पॉलीथीन का पैकेट लगाया और उसमें हम पौधरोपण करते हैं। उस पौध का हम विकास करते हैं। जिस प्रकार मातायें छोटे बालक को घर में रखती हैं। प्यार से रखती हैं. सुरक्षित रखती हैं। जब बड़ा होता है, तब बाहर जाने देती हैं। इसी प्रकार से उन छोटे–छोटे पौधों का हम विकास करते हैं। पौधों को हम बड़ा करते हैं। पौधे से प्रेम करो, पेड़ से प्रेम करो, पौधा बड़ा हो जायेगा। जब वह पांच–छह फुट का होता है, तब हम खेत में लगाते हैं। अभी हमने दो वर्ष पहले पांच–पांच साल के आंवले के पेड़ लगाये और ७० पेड़ लगाये आज ७० के ७० जीवित हैं। इनके साथ में आत्मीयता का स्थापन कैसे होना चाहिए। हमारे गांव की बालिकायें रक्षाबन्धन पर भाई को राखी बांधती हैं और एक राखी उस पेड़ को बांधती हैं जो उनके घर के सामने लगा होता है क्योंकि वह भाई है, वह परिवार का एक अंग है और यदि हम परिवार के अंग को छोड़ेंगे तो वह हमारी उपेक्षा करेगा। पेड़ से प्रेम करो, यह पर्यावरणता है। यह सुन्दर वातावरण का निर्माण करता है। तब मातायें अपनी पुत्री से कहती हैं, बेटी यह भी तेरा भाई है, इसको भी तिलक लगा दे। हमने ऐसे अनेक प्रयोग किये। सृजन एक उत्साह होते हैं जिन्हें हम सेवाबस्ती कहते हैं। ऐसी बस्तियों में भी हम जाते हैं पर यहां कोई भेद नहीं होता। जो आरती पूजा की उतरती है, वह ब्राह्मण को दी जाती है, वैश्य को दी जाती है और उन उपेक्षित बस्तियों के लोगों को दी जाती है, जिन्हें कभी अपने पास नहीं बिठाया। विवेकानन्द जी ने कहा था–"बाई गो ऑफ्टर दैट गॉड विच यू कैन नॉट सी वर्शिप दैट गॉड विच इज मूविंग ऑन द रोड इन दी फार्म ऑफ ह्यूमन बींग।" अरे उस ईश्वर की क्या उपासना करते हो, जिसे तुम देख नहीं सकते। ये दरिद्र वर्ग है, जिसे हम शोषित कहते हैं, पीड़ित कहते हैं, निरक्षर कहते हैं और साक्षात् परमात्मा ऐसे हृदय में विराजमान होता है, उसकी सेवा करो। इसलिए हमने कहा–नरसेवा, नारायण सेवा। मैं उत्तरांचल के क्षेत्रीय प्रचारक माननीय मधु भाई कुलकर्णी के साथ सेवा बस्ती में गया। उसे सेवा बस्ती समझने के लिए कह रहे हैं अपितु हमारे लिए सेवा बस्ती सम्पूर्ण भारत की सेवायें हैं, सब भारत है। उस बस्ती में गये थे, एक स्वयंसेवक की माता, जिसे तथाकथित अस्पृश्य कहते हैं, बिस्तर पर सो रही थीं।

देखते ही उसने हाथ जोड़ लिये। मैंने उसके सिर पर हाथ रखा। मैंने कहा–भाभी। क्योंकि यह रिश्ता गांव में चलता है, कोई धोबी है, कोई जमादार है, ये सब हमारा कोई काका है, दादा है। आज ये रिश्ते फिर दिखाई देते हैं। उनको फिर प्रतिष्ठित करना है। मैंने कहा–भाभी तू अच्छी हो जायेगी। उसकी सूखी आंखों से आंसू गिर गये। मैंने कहा–क्यों रोती है। भाभी, तू ठीक हो जायेगी। उसका लड़का खड़ा था। मैंने कहा–तू आज नौकरी पर नहीं जाना। इसे देखना, जब मैं उसको देखकर चला गया, थोड़ी देर में रोने की आवाज आई, मैंने पूछा–क्या हुआ। उसने कहा–तुम्हारे लिये उसके प्राण रुके थे, चले गये। सोच सकते हैं किस प्रकार की आत्मीयता उन बन्धुओं के साथ रही होगी कि प्राण भी रुक सकता है। यदि उसका सही प्रेम करने वाला हो तो। इस प्रकार का एक सामाजिक समरसता का वक्त था। एक पानी का स्रोत है, एक उसमें शायर है। मन्दिर में प्रवेश पर कोई रोक नहीं है, हनुमान मन्दिर हमारा एक आधार है। नालन्दा जी का मन्दिर हमारा आधार है। हम प्रतिवर्ष एक प्रतियोगिता करते हैं। थोड़ी चर्चा उसकी भी। दीपावली के अवसर से लेकर के वर्ष प्रतिपदा तक "आदर्श हिन्दू घर" यह प्रतियोगिता चलेगी। उसके तीस–चालीस बिन्दु हैं। आप जोड़ सकते हैं। कम कर सकते हैं। जो बालक–बालिका उसमें भाग लेगा, उसे हम भारतमाता का चित्र देते हैं। और वह एक चार्ट देते हैं, जिसमें बिन्दु लिखे हैं। वर्ष प्रतिपदा पर उसका निर्णय होगा कि सर्वश्रेष्ठ हिन्दु घर किसका निकला। हिन्दु कितने सरल हैं। पक्का है–कच्चा है इसकी चिन्ता नहीं। अपना घर भीतर–बाहर से साफ–सुथरा हो और साफ सच्चे घर में प्रवेश करते दीखना चाहिए कि हिन्दु का घर है। श्रीराम लिखा हो, ॐ लिखा हो। हनुमान ने भी रावण की नगरी पर पता कैसे लगाया था रामनाम अंकित गृह। विभीषण के घर पर रामनाम लिखा था। हमारे घर पर रामनाम है, ॐ है। हमारा प्रवेश करने से ही लगेगा कि हमारे हिन्दु का घर है। हमारे घर में तुलसी का पौधा तो माता के समान है। प्रत्येक घर में तुलसी का पौधा होना चाहिए। एक छोटी सी कथा है। जय व विजय दो भाई थे। माता शाम को तुलसी के पौधे के सामने आरती करती थी। जय व विजय आरती के समक्ष खड़े होकर तुलसी की पूजा में सम्मिलित होते थे, चरणामृत लेते। माता को प्रणाम करते। घर में सम्पन्नता, सुख–शान्ति, वैभव सब कुछ था। जिस घर में माता की प्रतिष्ठा है, पिता की प्रतिष्ठा है, जिस घर में बालकों के प्रति स्नेह है, **तुलसी का पौधा घर में है तो ये सब कुछ अपने आप ही आ जाता है। बड़े हो गये।**

एक इंजीनियर बन गया, एक डाक्टर बन गया और उनको खूब पैसा मिलने लगा पर जब खूब धन–सम्पत्ति मिलती है तो पुराना घर व पुराने मित्र बुरे लगने लगते हैं। नया मकान बन गया, अब वो घर नहीं है। अब वो मकान बँट गया। तुलसी का पौधा जहां पर था, जिसके कारण भाई–भाई व माता का सुखद जीवन था, बीच में दीवाल उठ गई। भाई–भाई से नहीं बोलता है, दोनों को नींद नहीं आती है। क्यों? बीच में तुलसी माता का स्थान नहीं है। यदि प्रत्येक हिन्दू है तो तुलसी का स्थान देगा। प्रतिवर्ष घर में एक फलदार वृक्ष लगायेगा। पड़ौसी के साथ मधुर सम्बन्ध हों, घर में भगवान का स्थान होगा, प्रतिदिन परिवार के लोग बैठकर कुछ चिन्तन करेंगे। सार्वजनिक कार्यक्रमों में भाग लेने वाले जायेंगे। घर का पानी घर के अन्दर रहेगा। मार्ग की सुरक्षा, मार्ग की स्वच्छता हमारा कार्य रहेगा। इस प्रकार के ऐसे तीस–पैतींस कार्यक्रम है, जिन कार्यक्रमों को प्रत्येक बालक अपने घर में लगाता है। जो भी कार्यकर्ता है, टिक लगाता है। क्योंकि उसको प्रथम पुरस्कार प्राप्त करना होता है। इन छोटी–छोटी सी बातों के दौरान एक करोड़ में परिवर्तन का दृश्य सामने आता है। यह भारत माता है, यह भारत जगाने के लिए हमारे हृदय में क्या होना चाहिए? मैं उसका पुत्र हूं। भारत माता ग्रामवासिनी है। भारत का स्वरूप देखना है तो ग्राम में जाओ। सारे ग्राम देश के एक सरीखे हैं क्योंकि उनके सब के अन्दर एक ही भावना है कि हम भारत माता के पुत्र हैं ये मेरा ग्राम मेरा स्वर्ग है।

चन्दन है इस देश की माटी, तपोभूमि हर ग्राम है...

❑

जब आपको ऐसे लोग मिलेगें, जो देश के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने को तैयार हैं और जो हृदय के सच्चे हैं, जब ऐसे लोग उत्पन्न होंगे, तभी भारत प्रत्येक दृष्टि से महान् होगा। मनुष्य ही तो देश के भाग्यविधाता हैं।

किसान शक्ति का प्रकटीकरण

-मा० दत्तोपंत ठेंगड़ी

कुंवर जी भाई, आदरणीय गुमान मल जी, माननीय बाबू लाल जी, मा० मित्तल जी, मा० कोठारी जी मंच पर आसीन अन्यान्य प्रमुख कार्यकर्तागण, किसानों के प्रति तथा भारतीय किसान संघ के प्रति जिन्होंने हमेशा ही आत्मीयता दिखाई है, ऐसे हमारे पत्रकार बन्धु और देश के कोने–कोने से आये किसान प्रतिनिधि बन्धुगण, भगिनीगण।

इस अधिवेशन का यह अन्तिम सत्र है। इस समय यहां बैठे हुए सब लोगों के मन में क्या भावनायें हैं, हम अपना मन टटोलकर देखें। जैसे आदरणीय गुमान मल जी ने कहा कि यह अधिवेशन ऐतिहासिक महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि जैसा कल कहा गया कि हम ऐसे बिन्दु पर पहुंचे हैं जहां से एक लम्बी छलांग हम लगा सकते हैं। यह ऐतिहासिक महत्व का अधिवेशन है। इस अधिवेशन का यह अन्तिम सत्र है। इस समय हमारे मन में क्या विचार है? क्या भावना है? हम अपने ही हृदय से पूछें। एक तो दिखेगा क्योंकि सबके साथ औपचारिक बातें होती रहती हैं, सबके मन में विचार सबकी भावना ख्याल में आती है कि यहां आते समय बहुत कष्ट उठाना पड़ा किन्तु यहां के वायुमण्डल के कारण सारे जो कष्ट थे, लोग भूल गये और बड़े आनन्द के साथ लोग रहे। यह एक बात ख्याल में आती है आनन्द से साथ रहे इसका कारण भी था कि संख्या बहुत ज्यादा होते हुए भी और साधन हमेशा की तरह कम होते हुए भी यहां के कार्यकर्ताओं ने जो व्यवस्था में थे, जिसमें भारतीय किसान संघ के कार्यकर्ता तो थे ही, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता भी थे, जिन्होंने इतनी उत्कृष्ट व्यवस्था रखी थी कि जितने कष्ट हमें आते समय हुए हम वे सारे कष्ट भूल गये। साथ ही साथ जो तीन दिन हम इकट्ठा रहे। इकट्ठा रहने का एक आनन्द होता है। अब यह आखिरी सत्र है। हमें यहां से जाना पड़ेगा। एक दूसरे से हम बिछुड़ जायेंगे। हमें आनन्द होता है यदि हम और अधिक समय तक एकत्रित रह सकते। अभी एक–दूसरे से बिछुड़ने का समय आ गया। इसके कारण कुछ दुःख हरेक के मन में है, मैं समझ रहा हूं। वैसे हरेक के मन में दो परस्पर विरुद्ध भावनायें भारतीय किसान संघ के कार्यकर्ता के नाते हैं। एक आनन्द की भावना है। हम देख रहे हैं कि किस तरह अपना किसान संघ आगे बढ़ रहा है। काम चारों ओर बढ़ रहा है। विनम्रता के साथ हम यह कहने की अवस्था में हैं कि वास्तविक रूप में अखिल

भारतीय संगठन जिसको कहा जा सकता है विभिन्न प्रदेशों में फैला हुआ ऐसा एकमात्र संगठन भारतीय किसान संघ है। इसके कारण आनन्द है किन्तु चिन्ता भी है। घोर चिन्ता है। किसानों की हालत दिन प्रतिदिन बिगड़ती जा रही है, हमारे सामने हमेशा ही समस्या रही है। हम हमेशा कहते हैं कि किसानों के सामने कितनी समस्यायें हैं, इनकी गिनती नहीं की जा सकती। किसान का सम्बन्ध जिस–जिस चीज के साथ आता है, चाहे बिजली हो पानी हो, खाद हो, बीज हो वह चीज उसके लिए समस्या बन जाती है और जिस व्यक्ति के साथ उसका सम्बन्ध आता है वह व्यक्ति भी उसके लिए समस्या बन जाता है। राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री से लेकर मण्डी समिति के चपरासी तक जिस किसी के साथ किसान का सम्बन्ध आता है वह उसके लिए समस्या बन जाता है। समस्यायें हमारे साथ हमेशा ही रहीं। उसके लिए हम संघर्ष करते रहे लेकिन अब जहां एक तरह हमारी शक्ति किसान संघ के नाते बढ़ रही है वहीं किसान की हालत दिन–प्रतिदिन नीचे की ओर जा रही है। यहां तक हर प्रदेश में से वृत्त सुनाई देता है कि हर दिन कितने किसानों ने आत्महत्या कर ली है। कोई भी खुशी से आत्महत्या नहीं करता। जब देखता है कि खुद के परिवार की, पत्नी है, बच्चे हैं, इनको रोटी खिलाने के लिए पैसा अपने पास नहीं है, परिवार को जिन्दा रखने का कोई उपाय नहीं है तो विवश होकर लोग आत्महत्या करते हैं। हर प्रदेश में हर दिन किसानों की आत्महत्यायें हो रही हैं। इतनी गिरावट किसानों की स्थिति में आ रही है। इसके कारण घोर चिन्ता हरेक के मन में है। तो ये परस्पर विरुद्ध दो बाते हैं। एक तरफ किसान संघ आगे बढ़ रहा है, यह भी सही है जो आनन्द की बात है। दूसरी तरफ किसानों की हालत में इतनी गिरावट है, यह चिन्ता की बात है। ऐसा कुछ हो रहा है जैसे स्टेशन से एक ही स्थान से दो रेलगाड़ियां आगे चल रही हैं। एक पैसेंजर ट्रेन है, एक एक्सप्रेस मेल ट्रेन है। दोनों आगे बढ़ रही हैं। पैसेंजर ट्रेन भी आगे बढ़ रही है, एक्सप्रेस ट्रेन भी आगे बढ़ रही है। पैसेंजर ट्रेन प्रगति नहीं कर रही ऐसी बात नहीं है किन्तु एक्सप्रेस ट्रेन पैसेंजर ट्रेन की तुलना में कई गुना आगे बढ़ रही है। इसलिए पैसेंजर ट्रेन में बैठे लोग चिन्तित हैं कि हमारी प्रगति तो हो रही है लेकिन हमसे कई गुणा अधिक तेजी से एक्सप्रेस ट्रेन आगे बढ़ रही है। इसके कारण पैसेंजर को चिन्ता होती है। वैसे ही हम आगे बढ़ रहे हैं किन्तु किसान विरोधी तथा देश विरोधी शक्तियां हमारी तुलना में कई गुना अधिक तेजी से आगे बढ़ रही हैं। इसके कारण घोर चिन्ता हम सबके मन में है।

ऐसी दो परस्पर विरोधी भावनायें यहां बैठे प्रत्येक बन्धु एवं भगिनी के मन में है। आप अपने मन को टटोलकर देखिये, आपके ख्याल में आयेगा कि हमारे सामने जो समस्यायें हैं, दो तरह की हैं। एक है राष्ट्रीय स्तर की, जिसका अधिक विवरण करने की आवश्यकता नहीं है। विवरण हो चुका है। प्रस्तावों के द्वारा हो चुका है, भाषणों के द्वारा हो चुका है। सारी दुनिया दो हिस्सों में बंटी हुई है, गोरे देश, गैर गोरे देश। गोरे देश गैर गोरे देशों को खाने के के लिए आगे बढ़ रहे हैं। अपनी स्वतन्त्रता अपनी सम्प्रभुता (सोबरनेटी) अपने उद्योग, अपनी कृषि इसको कैसे बचाना गोरे देशों के आक्रमण से यह समस्या जैसे अन्य विकासशील देशों के नवस्वतन्त्र देशों के सामने है हमारे सामने भी यह समस्या है और दूसरी ओर स्थानीय समस्यायें। किसान की किसान के नाते समस्यायें हैं। अलग–अलग विभागों में अलग–अलग समस्यायें हैं। वही फिर बातें बिजली खाद आदि, उनका निराकरण कैसे हो, ये जो अलग–अलग प्रकार हमारी समस्याओं के हैं हम अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का प्रश्न बाद में लेंगे। किन्तु किसान की किसान के नाते जो समस्यायें हैं उनको हल करने का अब तक जो प्रयास हुआ है ४७ के पश्चात् इसका इतिहास आप देखिये। तरह–तरह के लोगों ने प्रयास किये हैं। अलग–अलग विभागों में अलग–अलग संस्थायें खड़ी हुईं। अलग–अलग नेताओं ने आन्दोलन किए। भारतीय किसान संघ ने भी किये। किन्तु यहां भी विनम्रतापूर्वक मैं यह कह सकता हूं कि भारतीय किसान संघ के आन्दोलन में इतनी मात्रा में सफलता प्राप्त नहीं हो सकी जबकि नेता बड़े थे, संस्थायें बड़ी थीं। किन्तु इतनी सफलता प्राप्त नहीं हो सकी। कारण क्या है? आन्दोलन सफल होने के लिए सबसे पहले संगठन की ताकत चाहिए। हम ताकत बढ़ा रहे हैं, किन्तु दूसरी बात जो–जो आन्दोलन असफल रहे, उनका एक पक्ष मैं आपके ध्यान में लाना चाहता हूं। आन्दोलनकारी लोगों ने अपनी समस्याओं के बारे में आम जनता को विश्वास में नहीं लिया। आम जनता को नहीं समझाया जिसे अंग्रेजी में कहते हैं पब्लिक रिलेशन्स, इसके कारण किसानों के, मजदूरों के आन्दोलनों के समय एक बड़ा अनपेक्षित, विचित्र दृश्य हर समय निर्माण हुआ। दृश्य क्या था? मांगें और आन्दोलन गरीब मजदूरों कीं, गरीब किसानों की और जनता में ज्यादातर लोग गरीब किन्तु यह होते हुए भी जब आन्दोलन हुए तो परन्तु वास्तव में परिस्थिति ऐसी होनी चाहिए थी कि सरकार एक तरफ और आम जनता गरीब किसानों के पक्ष में, आम जनता गरीब मजदूरों के पक्ष

में यह दृश्य निर्माण होना चाहिए था। लेकिन प्रायः यह दृश्य दिखाई दिया कि आम जनता सरकार के पक्ष में। एक तरफ सरकार और आम जनता और दूसरी तरफ आन्दोलन करने वाले किसान और मजदूर। आम जनता की सहानुभूति प्राप्त करने का प्रयास अभी तक नहीं हुआ यह असफलता का एक कारण रहा है। दूसरा कारण सरकारी मशीनरी, जिनके खिलाफ आन्दोलन करना पड़ता है, वो कैसी है। इस विषय में सम्यक ज्ञान, सम्यक जानकारी हम रखते नहीं हैं। हम मोटा शब्द उपयोग में लाते हैं सरकार। सरकार क्या है? सरकार के दो हिस्से हैं–एक है स्थायी सरकार, दूसरी है अस्थायी सरकार। स्थायी सरकार कौन सी है? १९४७ के पूर्व से ही जो अफसरशाही (ब्यूरोक्रेट्स) देश पर लगातार शासन करते आये हैं यह स्थायी सरकार है। चुनावों में चुने जाने वाले जो विविध दलों की सरकारें, विविध मंत्री होते हैं ये अस्थायी (टेम्परेरी) सरकारें हैं। आने–जाने वाली सरकारें हैं। ये हमेशा बदलती रहती हैं। इसके कारण एक विचित्र परिस्थिति निर्माण होती है, जिसकी दखल लोग लेते नहीं। यह जो स्थायी सरकार के अफसर हैं, इन सबके मन में यह अहंकार है कि सालों तक हमने ही देश को चलाया है, हम ही उच्च डिपार्टमेन्टों को जानते हैं। ये मिनिस्टर तो कल के हैं, ये क्या जानेंगे? दुःख की बात है कि आज के लोकतंत्र की स्थिति ऐसी है कि मिनिस्टरों को भी पूरा ध्यान केन्द्रित करते हुए अपना एडमिनिस्ट्रेशन, अपनी फाइल देखने का इतना समय नहीं मिलता। वो तो कहीं पब्लिक फंक्शन में चले गये, सार्वजनिक उद्घाटन में चले गये, विमोचन में चले गये, सत्कार में चले गये, स्वागत समारोह में चले गये। इसी में ज्यादा समय बीतता है। प्रत्यक्ष फाइल देखना, प्रत्यक्ष एडमिनिस्ट्रेशन की तरफ एकाग्रचित्त होना, इसका समय नहीं मिलता और इसके कारण ये अफसरशाह जो कहेंगे वैसा उनको करना पड़ता है। मैं आपको बताना चाहता हूं जिम्मेवारी के साथ बताना चाहता हूं कि प्रायः ब्यूरोक्रेट्स में से ज्यादातर लोग देशी पूंजीपतियों के द्वारा या विदेशी पूंजीपतियों के द्वारा खरीदे हुए हैं और इसलिए देशी पूंजीपतियों और विदेशी पूंजीपतियों की रक्षा और संवर्धन करने के लिए गरीब किसान मजदूरों के खिलाफ काम करने की उनकी प्रवृत्ति है, वो करते आये हैं लेकिन वे ये समझते हैं हम तो सुरक्षित हैं। हम तो अपने ऑफिस में बैठे हुए सुरक्षित हैं। हम किसान विरोधी मजदूर विरोधी नीतियां बनायेंगे, मिनिस्टरों के हाथ में देंगे उनको वही नीतियां लेनी पड़ेंगी। लोग गालियां देंगे तो मिनिस्टरों को देंगे। हम तो सुरक्षित हैं। यह

सुरक्षितता का जो भाव है, उसके कारण वो जो चाहें सो गलत बातें करवा लेते हैं और इस ओर आन्दोलन करने वालों का ध्यान नहीं। वास्तव में अब समय आ गया है कि ये गलत अधिकारी कौन हैं। यह खोजना। खोजने में असुविधा नहीं है, खोजे गये हैं। इनको संरक्षण देने का प्रयास चल रहा है। ये ठीक है लेकिन कौन गलत अधिकारी है किसान विरोधी, मजदूर विरोधी, इनको खोजना, इनके नाम प्रकाशित करना और ऐसे अधिकारियों का सामाजिक बहिष्कार करना। कोई उनके यहां चाय पीने जायेगा नहीं, कोई उनको अपने यहां बुलायेगा नहीं। उनके साथ कोई व्यवहार नहीं करेगा। इससे उनपर दबाव पड़ेगा। आज तो वे समझते हैं हमारे लिए क्या है? असंतोष भड़क गया तो मिनिस्टरों को गाली मिलेगी। हम तो अपने कमरे में सुरक्षित बैठे हैं। यह सुरक्षितता नहीं रहना चाहिए। इनका सामाजिक बहिष्कार होना चाहिए। ये बातें हुई और हमारी निजी शक्ति बढ़ती गई तो मैं आपको आश्वासन देता हूं कि थोड़े ही समय में हमारी परिस्थिति में परिवर्तन आयेगा। मैं क्रान्तिकारी शब्द का प्रयोग नहीं करता, क्योंकि बड़े–बड़े शब्दों का प्रयोग करना अपनी पद्धति नहीं है। किन्तु बहुत बड़ा परिवर्तन आयेगा। परिवर्तन का प्रभाव आपको एक बात से मिलेगा। आज भी हम सरकार के पास जाते हैं और अपना आवेदन पत्र देते हैं। मंत्री के पास जाते हैं, मुख्यमंत्री के पास जाते हैं, प्रधानमंत्री के पास जाते हैं। भारतीय किसान संघ की ओर से, भारतीय मजदूर संघ की ओर से आवेदन पत्र देते हैं। उस आवेदन पत्र को मांगपत्र कहा जाता है (चार्ट ऑफ डिमान्ड्स)। किन्तु हमारी शक्ति का विकांस, जनता का सहयोग और नौकरशाही को नग्न करना यदि इतनी बातें हम कर सकें तो आने वाले पांच वर्ष में परिवर्तन होगा। पांच साल बाद हमारा शिष्ट मण्डल, हमारा प्रतिनिधि मण्डल जब मंत्री, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री से मिलने जायेगा और आवेदनपत्र देगा तो उस आवेदन पत्र का नाम मांगपत्र नहीं रहेगा, आदेश–पत्र रहेगा। किसानों की ओर से सरकार को याचना नहीं होगी बल्कि आदेश पत्र होगा कि सरकार को ये करना ही चाहिए। बाध्य होकर सरकार को करना पड़ेगा। इतना परिवर्तन पांच–छः वर्ष में हम ला सकते हैं। जहां तक हमारी स्थानीय समस्यायें हैं, उनके विषय में ये बातें ध्यान में रखनी चाहिएं। यहां से जाने के पश्चात् तीनों दृष्टि से हमें प्रयास करना चाहिए। अब आती है देश को खत्म करने वाली अन्तर्राष्ट्रीय शक्तियां। मैं इस विषय को पूरा बताने की आवश्यकता नही समझता। सब जानते हैं विश्व व्यापार संघ के नाम से वर्ल्ड बैंक के नाम से इन्टरनेशनल मोनेटरी फण्ड

के नाम से, अलग नाम से सभी गैर गोरे देशों को खाने का षडयन्त्र चल रहा है। आश्चर्य की बात लगती है कि हमारे राज्यकर्ता उनके सामने झुक रहे हैं। जब सब देख सकते हैं कि ये देश खत्म होगा। हमारे देशी उद्योग यदि विदेशी पूंजी के लिए खोल दिये जायेंगे, कृषि के बारे में यदि जो उनके इरादे हैं, पूरे हो जायेंगे तो हमारे उद्योग, छोटे उद्योग, मजदूर–किसान बेकार हो जायेंगे। इसके लिए बहुत अर्थशास्त्र की जानकारी आवश्यक नहीं है। हमारे राज्यकर्ताओं को इस बात की क्या जानकारी नहीं है? यह कहना अन्याय होगा कि हमारे राज्यकर्ता देश के प्रति ईमानदार नहीं हैं। फिर भी ये ऐसा क्यों कर रहे हैं? यह जानने की आवश्यकता है। गोरे देशों के आक्रमण की नीति क्या है? रणनीति क्या है? उनका मनोविज्ञान क्या है? यह थोड़ा सा समझने की आवश्यकता है। जो लोग आक्रमण कर रहे हैं प्रगम द पोजिशन ऑफ स्ट्रेट नहीं कर रहे। वो बड़े बलवान हैं। इसलिए आक्रमण नहीं कर रहे हैं बल्कि उनके पैरों के नीचे से जमीन खिसक रही है। अमरीका की बात करते हैं। अमरीका की अर्थव्यवस्था चरमरा रही है। दूसरो देशों को खाने की इच्छा उनके मन में इसलिए हो रही है क्योंकि यदि वे दूसरे देशों को नहीं खायेंगे तो उनकी अर्थ व्यवस्था टूट जायेगी। वे स्वयं की अर्थव्यवस्था को बीस वर्ष तक सुरक्षित नहीं रख सकते। वे सोच रहे हैं कि अन्य देशों का शोषण करते हुए यदि हमने आर्थिक साम्राज्य फैलाया तो बीस साल के अन्दर–अन्दर जो अमेरिका टूटने वाला है शायद और तीस–चालीस वर्ष चल जाये। शक्ति की स्थिति से आक्रमण नहीं कर रहे बल्कि अपनी जान बचाने के लिए वे सोच रहे हैं कि हम दुनिया का शोषण करेंगे तो शायद कुछ समय तक और जिन्दा रह सकेंगे। उनकी रणनीति यह है कि गलत प्रचार जनता को गुमराह करने वाला प्रचार सभी विकासशील देशों में करना और प्रचार के कारण सभी के मन में गलत धारणायें निर्माण करना। वास्तविक स्थिति यह है कि हमारा देश अपने ही पैरों पर खड़ा हो सकता है। कठिनाई होगी, हम गरीबी में से जा रहे हैं लेकिन यदि देश के लिए त्याग का आह्वान किया तो लोग त्याग के लिए तैयार हो सकते हैं। देश स्वतन्त्र होते ही हमने अपने घरेलू बचत (डोमेस्टिक सेविंग्स) बढ़ाने के लिए यदि आह्वान किया होता, गरीब लोगों ने भी उस बचत में अपना योगदान दिया होता किन्तु ऐसा आह्वान नहीं हुआ। गोवल्स ने कहा है कि एक झूठ को सौ बार बोलो तो वही लोगों को सच लगने लगता है। हिटलर ने कहा यदि झूठ ही बोलना है तो बहुत बड़ा झूठ बोलो कि लोग विश्वास ही नहीं

कर सकते कि कोई आदमी इतना बड़ा झूठ बोल सकता है। इसलिए उस पर लोग विश्वास करेंगे। ऐसे ही झूठी बातें इस देश में चल रही हैं और इसके कारण आत्मविश्वास का अभाव है। यदि अपनी शक्ति क्या है इसकी पहचान लोगों में आ गई तो कोई इस विदेशी और अमरीकी आक्रमण से डरेगा नहीं। उनके अन्दर ताकत नहीं है, किन्तु प्रचार के माध्यम से वे घौंस देना चाहते हैं और यह हमेशा उनकी नीति यही है। ताकत के कारण वे विजयी कभी नहीं हुए किन्तु वे धौंस देते जायेंगे। धौंस देने का अर्थ आप समझते हैं? वास्तव में उनके अन्दर ताकत नहीं हैं किन्तु धौंस देते हैं कि यदि आप हमारी शर्तें नहीं मानेंगे तो हम आपके ऊपर आर्थिक प्रतिबन्ध लगायेंगे। हम आपके देश को अलग–थलग कर देंगे। मैं आपको बताता हूं कि गरीब होते हुए भी हम लोग देश के लिए त्याग कर सकते हैं। मान लीजिये अमेरिका ने हमारे ऊपर आर्थिक प्रतिबन्ध लगाये। लोगों में ऐसी धारणा हो गई कि अमेरिका हमारे खिलाफ जायेगा तो हमारा क्या होगा? अमेरिका के बगैर हम जिन्दा रहेंगे क्या? मैं आपको स्पष्ट बताना चाहता हूं कि भारत को अमेरिका की जितनी आवश्यकता है, उससे ज्यादा आवश्यकता अमेरिका को भारत की है। यह बात ध्यान में रखनी चाहिए। यह दुनिया की नम्बर दो की बाजार की पैठ है। (नम्बर टू मार्केट ऑफ दी होल वर्ल्ड) और हमें धौंस देकर वे हमें दबायेंगे यह अलग बात है। हमारे राज्यकर्ता धौंस में आ जायेंगे अलग बात है। लेकिन यदि राज्यकर्ता धौंस में नहीं आते हैं और अमेरिका को स्पष्ट बताते हैं कि आप आर्थिक प्रतिबन्ध लगाईये हम देख लेंगे। कुछ कठिनाईयां आयेंगी। एक डेढ़ साल तक हम और भी अपनी कमर कस लें और थोड़े कष्ट बर्दाश्त कर लेंगे। हमें असुविधा, कष्ट सहने की आदत है। यह धीरज की लड़ाई है। हमारा धीरज कितना है, अमेरिका का धीरज कितना है? धीरज की लड़ाई में एक साल, डेढ़ साल, दो साल कष्ट बर्दाश्त करने की हमारी ताकत है। दुनिया ने मान लिया है कि यदि सबसे ज्यादा धीरज रखने वाला कोई देश है तो वह भारत है। लेकिन दुनिया ने यह भी देखा है कि जिनके अन्दर कोई धीरज नहीं है, ऐसे सबसे कम धीरज वाले लोग अमेरिकन हैं। वो धौंस दे सकते हैं लेकिन स्वयं उपभोक्तावादी होने के कारण, आरामपरस्त होने के कारण, हमेशा अधिक उपभोग करने की आदत के कारण, उनके उपभोग में यदि किसी कारण कमी आ जाती है वे बर्दाश्त नहीं कर सकते और फिर पीछे हट जाते हैं। कहते हैं बड़ी ताकत है। लेकिन धीरज है क्या? वियतनाम जैसा छोटा देश था। जब

वियतनाम में अमेरिकन फौज घुस गई, कहा गया अरे यह छोटा सा देश अमेरिका के सामने क्या टिकेगा। छोटी जनसंख्या है, उनके पास अस्त्र–शस्त्र नहीं। लेकिन धीरज के साथ लोगों ने प्रतिकार किया। अमेरिकन लोगों ने वियतनाम की लड़ाई का स्वागत किया। यह सोचकर कि लड़ाई जल्दी समाप्त हो जायेगी, हम विजयी होंगे। लेकिन जैसे वियतनाम के लोगों का प्रतिकार लम्बा होता गया, साल के बाद साल लड़ाई चलती रही। इतना स्ट्रेन बर्दाश्त करना अमेरिका के लोगों के स्वभाव में नहीं था। आखिर दस साल के अन्दर अमेरिका के लोगों ने राज्यकर्ताओं से मांग की कि वहां से शरणागत ही स्वीकार कीजिये। अपनी सेनायें निकाल लीजिये। और बेशर्मी के साथ वियतनाम जैसे छोटे देश के सामने पूंछ हिलाते हुए अमेरिकन सेना को वापिस जाना पड़ा। कारण क्या था? धीरज नहीं? हमारी सबसे बड़ी ताकत हमारा धीरज है अमेरिका की सबसे दुर्बलता धीरज का अभाव है। इसके कारण यदि हिम्मत से हम समझ लें जैसे अब्दुल कलाम ने कहा कि हम प्रथम क्रमांक राष्ट्र के नाते अपने को २०२० तक ला सकते हैं यदि इच्छा शक्ति हमारे लोगों में रही तो आज मैं आपको बताता हूं कि आज जो धौंस दे रहे हैं कि हम आर्थिक प्रतिबन्ध लगायेंगे तुम लोग मर जाओगे, धीरज के साथ यदि हम प्रतिकार करते हैं, उल्टी स्थिति आ जायेगी। धौंस में राज्यकर्ता आ रहे हैं, यह अलग बात है। हमारे इधर एक कहानी है कि धौंस देने का मामला क्या होता है। एक पति–पत्नि थे। पति हमेशा पत्नि को धौंस देता था। पत्नी को पसन्द नहीं ऐसे कई कार्य वह पत्नि से करा लेता था। यदि वह करने के लिए इच्छुक नहीं तो हर समय उसको धौंस देता था। यदि यह काम नहीं करेगी मैं चला जाऊंगा और जब वह कहता था कि मैं चला जाऊंगा, पत्नि घबरा जाती थी और इच्छा न होते हुए भी हर कार्य करती थी। उसकी सहेलियों ने देख लिया। सहेलियों ने कहा कि यह तुम कब तक करोगी? जिन्दगी भर ऐसा ही चलेगा क्या? वह बोली, क्या करें मेरे पतिराज हैं, वे कहते हैं कि मैंने काम नहीं किया तो मैं चला जाऊंगा। सहेलियों ने कहा कि यह सिर्फ धौंस है। ये कहीं नहीं जाने वाले। पत्नी बोली कि यदि चले जायेंगे तो क्या होगा? सहेलियों ने कहा कि तुम प्रयोग करके देखो। यदि अब तुम्हारे पति ने कहा कि चला जाऊंगा, तो कहना चले जाओ। तुम्हारा सामान क्या देना है? मैं बांध देती हूं। पत्नी बोली अबकी बार बोलूंगी। एक दिन पति महोदय आये। कुछ काम बताया, पत्नि को पसन्द नहीं था तो पति ने हमेशा की तरह धौंस दे दी कि यह काम करो

नहीं तो मैं चला जाऊंगा। पत्नी ने शान्तचित्त से कहा कि आप चले जाइये। पति को अपेक्षा ही नहीं थी कि पत्नि चले जाने को कहेगी। वो असमंजस में आ गया तथा बोला कि मैं सचमुच चला जाऊंगा। पत्नी बोली कि आप चले जाईये मैं आपका सामान बांध देती हूं। पत्नी ने पति के कपड़े बांधकर उसके हाथ में दे दिये। पति को बाहर जाना ही पड़ा। उसे आश्चर्य हुआ कि हमेशा तो हमारे धौंस में आती थी, चाहे जो काम हम करा लेते थे किन्तु आज इसे क्या हो गया? किन्तु उसने सोचा, ठीक है कुछ समय बाद दिमाग ठिकाने आ जायेगा। एकदम गांव छोड़कर नहीं जाऊंगा। गांव में एक मन्दिर था, वहां उसने अपना सामान रख दिया और प्रतीक्षा करता रहा कि थोड़ी देर के बाद पत्नि को पश्चाताप होगा और वह आ जायेगी। एक दिन चला गया, पत्नी नहीं आई। अब ये बेचैन होने लगा। दूसरे दिन भी पत्नि नहीं आई। यह देखकर पति महोदय की बेचैनी बढ़ने लगी। तीसरे दिन तो वह अपना धैर्य खो बैठा। शाम को उसके घर के बैल, गाय, भैंस जब चारा खाकर वापस आने लगीं तो उसने भैंस की पूंछ पकड़ ली और यह मन्त्र जपते–जपते वह आगे बढ़ा कि हे भैंस मुझे जबरदस्ती क्यों ले जा रही है। मैं तो घर वापिस नहीं जाना चाहता। यह कहते हुए वह घर में प्रवेश करने लगा। हमारे यहां उसका नाम संतोबा पवार कहा गया है। ये जो धौंस दे रहे हैं, चाहे क्लिंटन रहे चाहे अगले चुनाव में और कोई आ जाये कोई भी अमेरिका का राष्ट्रपति रहे आज जो धौंस दे रहा है हम यदि धौंस को न मानते हुए अपनी भूमिका पर दृढ़ रहे तो अमेरिका के राष्ट्रपति को हम संतोबा पवार की स्थिति में ला सकते हैं। यह बात आपको ध्यान में रखनी चाहिए। वास्तव में लोग नहीं समझते। गलत बात के प्रचार के शिकार बन जाते हैं। इसके कारण हमारी ताकत होते हुए भी हम अपने को दुर्बल समझते हैं। आखिर ताकत क्या है? हमें जिसका साक्षात्कार होता है वह हमारी ताकत है। हम लोग ताकत का साक्षात्कार ही नहीं करते, केवल मानसिक दुर्बलता के कारण होता है। मैंने एक उदाहरण सुना। विभाजन के समय लाहौर के पास एक गांव था। मेरे एक मित्र जो आज संघ के प्रचारक हैं, झण्डेवाला पर रहते हैं, वे उस गांव के थे। उन्होंने बचपन की आंखों देखी घटना बताई। वहां के एक नवाब थे। पुराने जमाने में नवाब, राजा इनको शौक था कि अपने दरबार में अच्छे–अच्छे कलाकार को रखना। कोई तबले वाले को रखता था, कोई संगीत वाले को रखता था, कोई चित्रकार को रखता था। नवाब साहब को शौक था कि पंजाब का सबसे श्रेष्ठ पहलवान मेरे

दरबार में रहे। पंजाब का श्रेष्ठ पहलवान उनके दरबार में था। उन्होंने घोषणा की थी कि कोई भी मेरे पहलवान के साथ कुश्ती खेलने को आ जाये। यदि वह पहलवान मेरे पहलवान से जीतता है तो मैं अपना आधा राज्य उसे दे दूंगा। यदि वह हार जायेगा तो उसे पांच साल के लिए जेल जाना पड़ेगा। ऐसे चार–पांच लोग आये तथा पहलवान से हार गये। फिर किसी की हिम्मत ही नहीं होती थी क्योंकि सभी जानते थे कि पांच साल के लिए जेल जाना पड़ेगा। एक दिन एक पिता पुत्र नजदीक के गांव से आये। धर्मशाला में वहां टिके। उनका पुत्र १६–२० वर्ष का दुबला–पतला, कभी व्यायाम नहीं किया, कभी अखाड़े में नहीं गया, कभी कुश्ती नहीं खेली और उसका पिता धर्मशाला में रहने लगे। लड़के के पिता नवाब से मिलने दरबार में गये और बोले कि मेरा लड़का आपकी चुनौती को स्वीकार करता है। नवाब साहब कहने लगे, सोच लो पांच साल के लिए जेल जाना पड़ेगा। लड़के के पिता ने कहा, सोच लिया, मेरा लड़का पहलवान के साथ कुश्ती करेगा। नवाब साहब बोले कि कुश्ती का दिन तय कर लो। लड़के के पिता ने कहा कि यदि आप इन्साफ चाहते हैं तो मैं गरीब आदमी हूं, अपने लड़के को खिला–पिला नहीं सकता। किन्तु आप अपने पहलवान को पूरी खुराक दे रहे हैं। बराबरी का मामला होना चाहिए। मेरे लड़के लिए छः महीने की खुराक का पैसा दीजिये, उसके बाद कुश्ती तय करेंगे। छः महीने बाद कुश्ती खेलने की तारीख तय हुई। खुराक के नाते पैसा भी नवाब साहब ने दे दिया। ये दोनों पिता–पुत्र कुछ नहीं करते थे। खाते–पीते थे और सोते थे। ऐसे ही चार महीने बीत गये। इसके बाद नवाब के पहलवान के मन में एक बात आई कि यह कौन है जो मुझसे कुश्ती करना चाहता है। उसने अपने एक मित्र को जानकारी लेने के लिए धर्मशाला में भेजा। उसने देखा कि पहलवान से लड़ने वाला वह लड़का बहुत दुबला–पतला था। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ। पहलवान के मित्र ने पूछा कि यही लड़का पहलवान से लड़ेगा। लड़के के पिता ने कहा कि हां यही लड़ेगा। पहलवान ने सोचा यह दुबला–पतला लड़का मुझसे लड़ने आयेगा, उसके पीछे जरूर कोई रहस्य होगा। पहलवान ने अपने मित्र से कहा, जरा पता लगाओ कि इसके पीछे क्या राज है? उसने और मित्रता बढ़ाई। लड़के के पिता जानते थे कि यह जो व्यक्ति हमसे जानकारी ले रहा है, यह पहलवान का मित्र है और रहस्य की खोज करने के लिए आ रहा है। पन्द्रह दिन पहले लड़के के पिता ने पहलवान के मित्र को कहा कि देखो, तुम मेरे मित्र हो, इसलिए मैं तुम्हें बताता

हूं, लेकिन किसी को यह बात मत बताना। यदि किसी बात को फैलाना हो तो आप किसी के कान में कोई बात बताईये तथा कहिये कि यह बात गुप्त है, किसी को भी मत बताना। बहुत जल्दी ही यह बात चारों ओर फैल जायेगी। लड़के के पिता ने कहा कि यह गुप्त बात है, किसी को बताना नहीं। ऐसा है कि मैं अच्छी तरह से जानता हूं कि मेरा लड़का दुबला-पतला है। लकड़ी पहलवान है किन्तु मैं तुम्हें आश्वासन देता हूं कि मेरा लड़का ही विजयी होगा। पहलवान के मित्र ने पूछा कि वह कैसे? तो लड़के का पिता बोला, देखो मैंने योग साधना की है, मुझे सिद्धि प्राप्त है। यह सिद्धि ऐसी है कि कुश्ती के समय पहले हाथ से हाथ मिलना पड़ता है। जो कोई मेरे लड़के से हाथ मिलायेगा, हाथ से हाथ लगते ही वह बेहोश होकर नीचे गिर जायेगा। फिर वह व्यक्ति जिन्दा रहेगा या नहीं, इसके बारे में कहना मुश्किल है। अब यह खबर पहलवान के पास पहुंच गई। आज भी लोगों का विश्वास है कि उन दिनों भी लोगों का विश्वास था। पहलवान साहब घबरा गये। कुश्ती का दिन आया। छोटा गांव था। तीन-चार हजार लोग नजदीक के गांवों से एकत्रित हुए। गांव के हिसाब से तीन-चार हजार संख्या बहुत मानी गई। नवाब साहब ने अपनी कुर्सी डाली। बीच में लाल मिट्टी से भरा मैदान था। यह लकड़ी पहलवान बड़े तरीके से मैदान के बीच में आने लगा। जैसे ही दोनों एक-दूसरे के पास आये तो लकड़ी पहलवान ने अपना हाथ सामने किया तो नवाब साहब का पहलवान पीछे हटने लगा। लकड़ी पहलवान आगे की ओर बढ़ता गया तथा दूसरा पहलवान पीछे की ओर हटता गया। लोगों ने यह विचित्र दृश्य देखा कि पहवान आगे की ओर भाग रहा है और लकड़ी पहलवान उसका पीछा कर रहा है। यह आँखों से देखी बात हमारे हरीश जी ने बताई। किसकी ताकत कितनी थी? किन्तु गलत प्रचार के कारण मेरे अन्दर ताकत नहीं, मैं बेहोश हो जाऊंगा, पहलवान होने के बाद भी वह लकड़ी पहलवान के सामने भागने लगा। आज भारत सरकार की यही हालत है। हमारे अन्दर ताकत है। अमेरिका हमारे सामने टिक नहीं सकता। लेकिन अपनी शक्ति का साक्षात्कार नहीं और इसके कारण अमेरिका जैसे देश, जिसका कोई धीरज नहीं, जिन्होंने वियतनाम जैसे देश के सामने हथियार डाल दिये थे। ऐसे गैर धीरज वाले, जहां के लोगों ने उपभोगवादी होने के कारण अपने आगे का तीन वर्ष का क्रेडिट कार्ड खत्म किया हुआ है। ऐसे उपभोगी लोगों के सामने हमारे राज्यकर्ता घबरा रहे हैं। आम जनता समाचार पढ़कर गुमराह होती है कि अगर अमेरिका की नहीं सुनेंगे

तो हमारा क्या होगा? तो आम जनता और राज्यकर्ताओं को अपनी शक्ति का साक्षात्कार कराना है। जैसे समुन्द्र के तट पर जाने के बाद हनुमान जी अपनी शक्ति भूल गये। सोचने लगे इतना लम्बा महासागर मैं कैसे पार कर लंका जा सकता हूँ। जामवन्त आये। जामवन्त ने कहा, अरे हनुमान तुम तो वही हो कि जिसने जन्म लेते ही भूख के कारण सूर्य को लड्डू समझकर सूर्यबिम्ब पर उड़ान ली थी। ऐसी याद दिलाई। हनुमान जी को अपनी शक्ति की याद आई और वे समुन्द्र लांघ गये। आज भारतीय किसान संघ ने आम जनता के लिए और राज्यकर्ताओं के लिए जामवंत का कार्य करने की आवश्यकता है। यदि आपने यह कार्य किया तो मैं आपको बताता हूं कि थोड़े ही समय में जनता को साक्षात्कार होगा। यह यदि हुआ तो इनके जो नापाक इरादे हैं, यह विफल हो जायेंगे। गैर गोरे देश अपने इरादों में सफल हो जायेंगे। गैर गोरे देश गोरे देशों को मात दे देंगें, कहेंगे कि विश्व व्यापार संगठन में हम तब तक रहेंगे जब तक हमें समानता का व्यवहार मिल रहा है। यदि समानता का व्यवहार नहीं मिला तो सभी विकासशील देश विश्व व्यापार संगठन से बाहर आकर अपना अलग ग्रुप बनाते हुए गोरे देशों को तंग करेंगे। ऐसी घोषणा करेंगे। उनके सामने गोरे देश टिक नहीं सकते। यह बात आपको ध्यान में रखनी चाहिए। यह साक्षात्कार राज्यकर्ताओं को जनता द्वारा करा देना। यह जिम्मेदारी ऐसे देशभक्त संगठनों की है, जैसे भारतीय किसान संघ है, भारतीय मजदूर संघ हैं। आने वाले दिनों में विदेशी आक्रमण बड़ी तेजी से आगे आ रहा है, उतने ही तेजी से हमने यदि अपने जनजागरण का कार्य तेजी से बढ़ाया, इन सब बातों को दुरुस्त किया जा सकता है। इस आत्मविश्वास के साथ हम यहां से जायें, इतना ही कहना इस समय पर्याप्त है।

❑

मनुष्य के लिए गाय सब दृष्टि से पालनीय है। गाय से अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष, इन चारों पुरूषार्थों की सिद्धि होती है। आज के अर्थ प्रधान युग में तो गाय अत्यन्त ही उपयोगी है। गोपालन से, गाय के दूध, घी, गोबर आदि से धन की वृद्धि होती है। हमारा देश कृषिप्रधान है। यहां खेती में जितनी प्रधानता गायों और बैलों की है, उतनी प्रधानता अन्य किसी की भी नहीं।

—स्वामी रामसुखदास

राष्ट्रीय महाधिवेशन की कुछ झलकियाँ-२

हल का पूजन

गौमाता पूजन

मंच पर उपस्थित अतिथिगण

ध्वजारोहण

स्मारिका का विमोचन

एक अन्य स्मारिका का विमोचन

कार्यक्रम का समापन

मातृशक्ति

राष्ट्रीय महाधिवेशन की कुछ झलकियाँ—३

स्नान स्थल

भोजन वितरण

भोजन करते हुए प्रतिनिधि

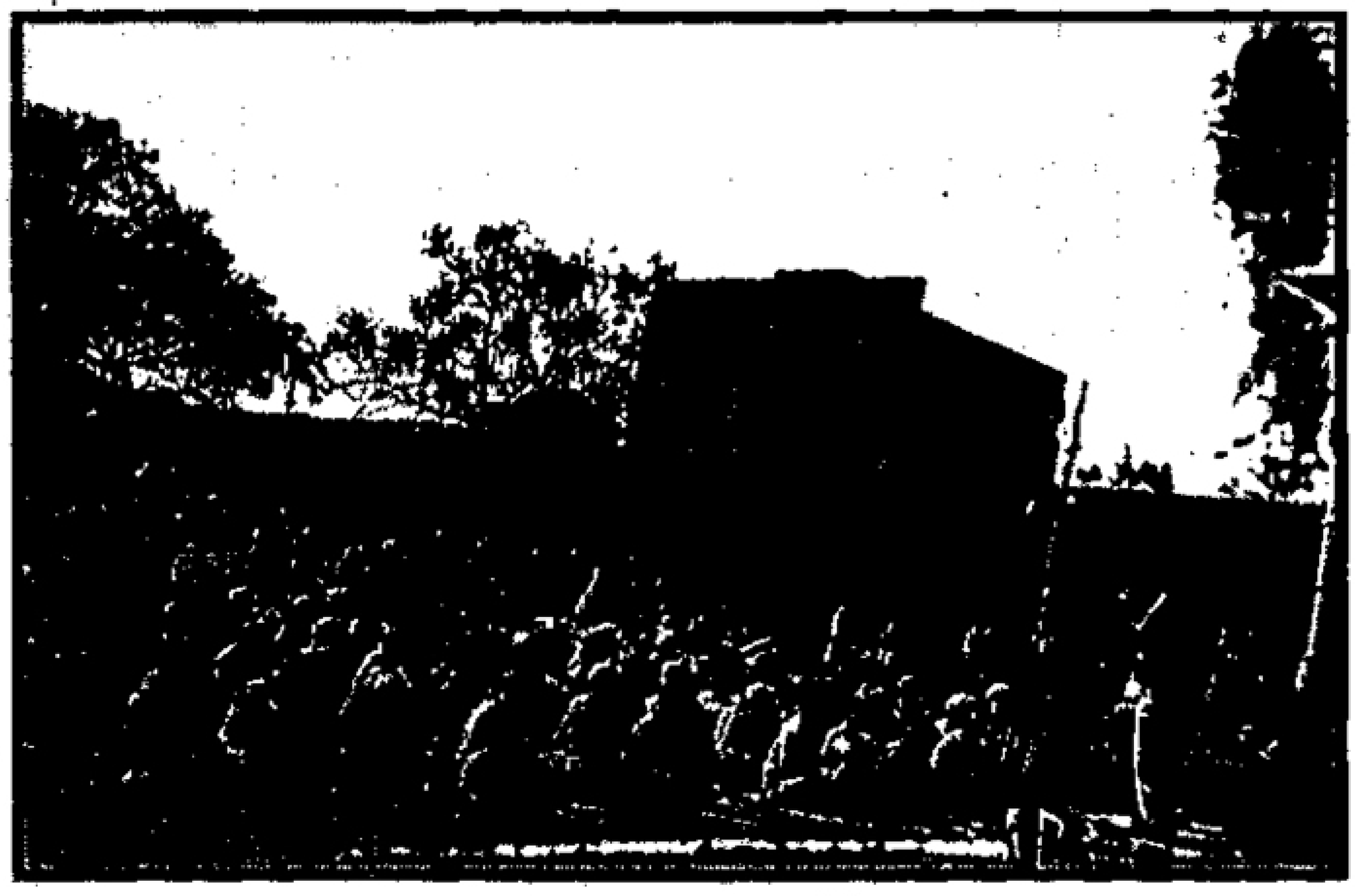

क्षेत्रशः बैठकें

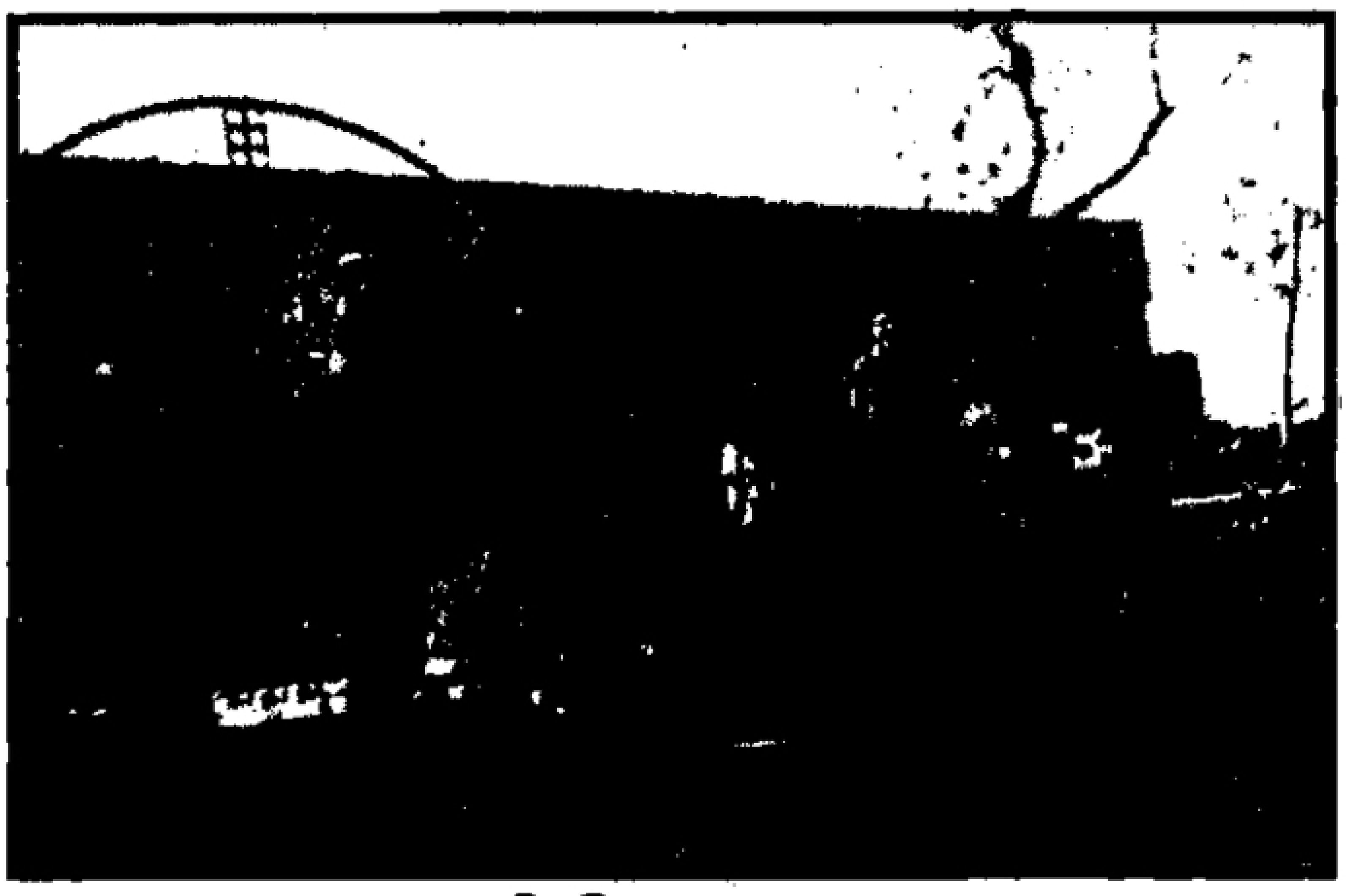

चिकित्सालय

व्यवस्था की बहनें भोजन करते हुए

प्रदर्शनी

अधिवेशनोपरान्त हस्तिनापुर के कार्यकर्तागण
अ०भा० संगठन मंत्री के साथ

वृत्त निवेदन करते हुए
कुछ प्रान्तों के मन्त्री एवं संगठन मन्त्री

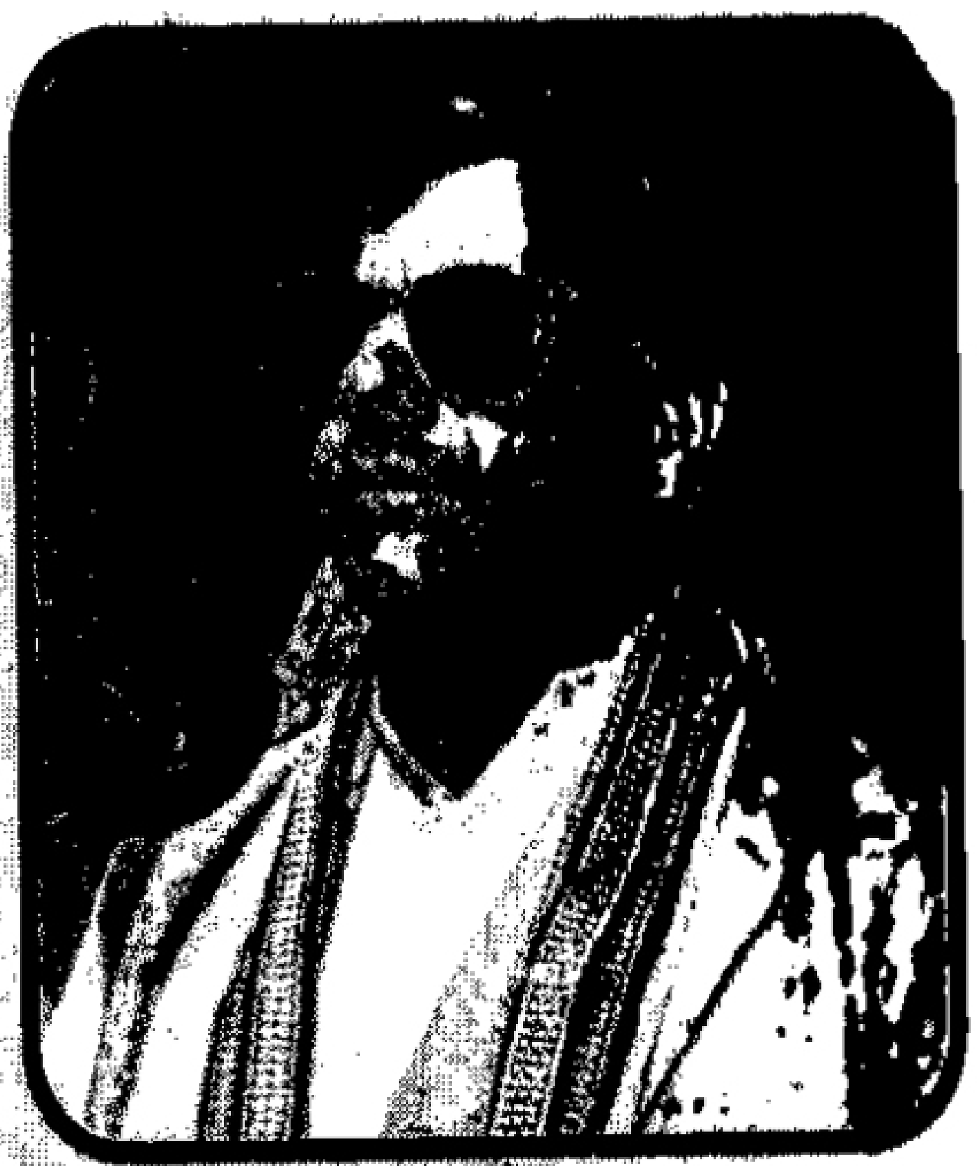

कृषकों के देवता

भगवान श्री बलराम